ISSN 2394-8485

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमत ज्ञान

आषाढ़-सावन, संवत् नानकशाही 552
वर्ष 13 अंक 11 जुलाई 2020

मुख्य संपादक : सिमरजीत सिंघ
संपादक : सतविंदर सिंघ फूलपुर
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा

सालाना (देश)	10 रुपये
आजीवन (देश)	100 रुपये
सालाना (विदेश)	250 रुपये
प्रति कापी	3 रुपये

चंदा भेजने का पता

सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर साहिब- 143006
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादकीय विभाग 304
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार 4
संपादकीय 5
हरिकिसन भयो असटम बल बीरा 8
-डॉ. रूप सिंघ
बाला प्रीतम का जीवन-व्यक्तित्व 11
-डॉ. सत्येंद्रपाल सिंघ
श्री अकाल तख्त साहिब की स्थापना 15
-डॉ. बलवंत सिंघ
भाई मनी सिंघ जी का शाहीदी घराना 21
-प्रो. पिआरा सिंघ पदम
. . . भाई तारू सिंघ जी शहीद 24
- डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'
जिन्होंने सिक्खी केशों-श्वासों संग निभाई . . . 26
-डॉ. राजेंद्र सिंघ साहिल
. . . बाबा गुरदित्त सिंघ 28
-सिमरजीत सिंघ
इंकलाबी योद्धा : शहीद ऊधम सिंघ 42
-सतविंदर सिंघ फूलपुर
गुरमति विचारधारा : एक अध्ययन 45
-डॉ. सरबजीत कौर
ख़बरनामा 49

गुरबाणी विचार

सावणि सरसी कामणी चरन कमल सिउ पिआरु ॥
मनु तनु रता सच रंगि इको नामु अधारु ॥
बिखिआ रंग कूड़ाविआ दिसनि सभे छारु ॥
हरि अंम्रित बूंद सुहावणी मिलि साधू पीवणहारु ॥
वणु तिणु प्रभ संगि मउलिआ संम्रथ पुरख अपारु ॥
हरि मिलणै नो मनु लोचदा करमि मिलावणहारु ॥
जिनी सखीए प्रभु पाइआ हंउ तिन कै सद बलिहार ॥
नानक हरि जी मइआ करि सबदि सवारणहारु ॥
सावणु तिना सुहागणी जिन राम नामु उरि हारु ॥६ ॥ *(पन्ना १३४)*

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी महाराज बारह माहा मांझ की इस पावन पउड़ी में सावन मास की सुहावनी ऋतु और इससे संबंधित प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक दृश्य-चित्रण तथा बिंबावली के प्रसंग में आत्मा की प्रभु-मिलाप की इच्छा के साथ-साथ गुरमति मार्ग के अनुरूप इसके लिए दिशा-निर्देश बख्शिश करते हैं।

गुरु जी कथन करते हैं कि जैसे सावन में वनस्पति रस से भरपूर हो जाती है वैसे ही रूहानी मार्ग पर चलने वाली जीव-स्त्री के लिए प्रभु-भक्ति के मार्ग में भी ऐसा ही पड़ाव आता है जब उसका प्रभु के कमल रूपी सुंदर चरणों के साथ प्यार बन जाता है अथवा उसे प्रभु-चिंतन-मनन में रस आने लगता है। उसका मन सदैव मालिक के रंग में रंग जाता है और वह उसी एक नाम को अपने जीवन का आधार बना लेती है। उसे सांसारिक विषय-विकारों के रंग में झूठ अथवा उनके अस्थायी होने का आभास हो जाता है और ये उसे राख-रूप प्रतीत होते हैं। उसको प्रभु-नाम-रूप अमृत बूंद के सुहावनी होने का अनुभव होता है और यह साधु-जनों की संगत में ही पी जा सकती है, का तथ्य ज्ञात हो जाता है।

सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि जिस प्रभु के संग से सारी वनस्पति ने प्रफुल्लित होना है, उस प्रभु का अंत मनुष्य-मात्र नहीं पा सकता। ऐसे सक्षम प्रभु को मिलने के लिए मेरा मन लोचना करता है, परंतु वह मात्र लोचने से नहीं बल्कि उसी की कृपा से मिलता है। जीव-आत्मा महसूस करती है कि उसने अभी मालिक को पाया नहीं, परंतु जिन भाग्यशाली जीव-स्त्रियों ने उस मालिक को प्राप्त कर लिया है उन पर मैं सदैव बलिहार जाती हूं। गुरु जी कथन करते हैं कि हे प्रभु! मुझ निमाणी पर भी कृपा करो, गुरु-शबद द्वारा आप मेरी तकदीर संवारने वाले हो। सावन का महीना उन भाग्यशाली जीव-स्त्रियों के लिए ही शीतल व सुहावना है जिन्होंने अपने हृदय-रूपी गले में प्रभु-नाम-रूपी हार पहन लिया है

संपादकीय

भारत में नहीं रुक रही सिक्खों के साथ धक्केशाही

देश की आज़ादी से लेकर अब तक भारत सरकार सिक्खों के साथ धक्का करती आई है। कभी पंजाबी भाषा के आधार पर धक्का, कभी पंजाब के नहरी पानी के विभाजन को लेकर धक्का, कभी पंजाबी बोलते क्षेत्रों के विभाजन में धक्का आदि। पिछले लगभग पाँच-छः वर्ष से देश के अंदर बहुत ही सोची-समझी साजिश के अंतर्गत देश के विभिन्न राज्यों में सिक्खों को उजाड़ने की मंशा से सिक्खों की कालोनियों और ज़मीनों पर कब्ज़ा करने की कार्यवाहियां ज़ोर पकड़ती जा रही हैं।

इसी कड़ी में बीते समय में सरकारों की तरफ से पहले गुजरात में, फिर मध्य प्रदेश में सिक्खों के घरों पर बुलडोज़र चला कर उजाड़ने तथा उनकी फसलों को बरबाद करने की कोशिश की गई। अब हाल ही में कुछ समय पहले उत्तराखंड के ज़िला ऊधम सिंघ नगर की तहसील खटीमा के गांव गुलानी में ४०-४५ सिक्ख परिवारों की सवा सौ एकड़ ज़मीन में पकी हुई गेहूँ की फसल प्रशासन ने धक्के से काट ली।

इसी तरह बीते दिनों से सोशल मीडिया पर एक ही दिन दो खबरें घूम रही थीं। एक ख़बर थी विदेश की, जिसमें न्यूजीलैंड की सरकार ने कोरोना महामारी के दौरान तालाबन्दी के समय सिक्खों द्वारा की गई मानवता की सेवा के बदले में न्यूजीलैंड पार्लियामेंट में सिक्ख भाईचारे का धन्यवाद किया, जबकि दूसरी वीडियो उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा सिक्खों के उजाड़े की थी। इस दूसरी वीडियो में उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड सिक्ख संगठन के प्रधान सरदार जसबीर सिंघ उत्तर प्रदेश की योगी सरकार द्वारा सिक्खों के किए गए उजाड़े की दासतां बयान कर रहे थे। अपने देश भारत के राज्य उत्तर प्रदेश के दो गाँवों— चम्पतपुर, तहसील नगीना, ज़िला बिजनौर और गाँव रन नगर, तहसील निघासन, ज़िला लखीमपुर खीरी में कई वर्षों से ख़ुशहाल ज़िंदगी बिता रहे लगभग पांच-छः सौ परिवारों को उजाड़ने की मंशा से उत्तर प्रदेश में मुख्यमंत्री आदित्य नाथ योगी की भाजपा सरकार ने ५० के करीब ट्रैक्टर और बहुत-सी जे. सी. बी. मशीनें भेजकर सिक्खों की सैकड़ों एकड़ भूमि में खड़ी फ़सल को जोत कर बरबाद कर दिया और ज़मीन को अपने कब्ज़े में ले लिया। सिक्खों द्वारा विरोध करने के कारण उनके घरों में घुस कर स्त्रियों के साथ बदसलूकी की गई।

देश के बटवारे के बाद जब १९५०-५५ ई. में सिक्खों ने यहां आकर ज़मीन खरीदी तो तत्कालीन सरकार ने इन्हें साथ लगती कुछ बंजर ज़मीन भी जोतने की मौखिक आज्ञा दे दी। तब से उक्त गाँवों के सिक्ख यह ज़मीन जोतते आ रहे थे। सरकार ने यह ज़मीन वन विभाग की बता कर सिक्खों की खड़ी फ़सल धक्के से काट ली या जोत दी। इससे पहले सिक्खों ने प्रशासनिक अधिकारियों से कहा कि हमें दो-तीन महीने का समय दे दो, ताकि हम अदालती कार्यवाही के माध्यम से कागज़ात तैयार करवा कर अपना

पक्ष स्पष्ट कर सकें, परन्तु हकूमत ने एक न मानी।

दिलचस्प बात यह है कि यह सारा मंजर उस समय घटित हुआ जब सारा विश्व कोरोना महामारी से जूझ रहा है। सभी देशों की सरकारें अपने नागरिकों के लिए हर प्रकार की आर्थिक मदद कर रही हैं। पूरी दुनिया में सिक्खों द्वारा लंगर लगा कर मानवता की सेवा की जा रही है। इसी समय में सांप्रदायिक सोच की धारक सरकार द्वारा सिक्खों को उजाड़ कर उन्हें ख़ानाबदोश बनाने का शर्मनाक घटनाक्रम चलाया जा रहा है।

१९४७ ई. के बटवारे के बाद सिक्खों को जब उत्तर प्रदेश के बे-आबाद क्षेत्रों में बंजर पड़ी ज़मीन आवंटित हुई या सिक्खों ने खरीदी, उस समय बैलों द्वारा खेती की जाती थी। सिक्ख प्रातः काल मुर्गे की बांग सुन कर उठ जाते और हल जोड़ लेते। जमीन बंजर होने के कारण उसमें सांप आदि जहरीले कीड़े-मकौड़ों की भरमार थी। सांपों का फन कुचलते हुए सिक्ख किसान बंजर जमीन को उपजाऊ बनाने में लगे रहे। उनके बैल भले थक जाते मगर वे नहीं थकते, क्योंकि पाकिस्तान से उजड़ कर केवल तन के कपड़ों में खाली हाथ आए उनके सामने पैर जमाने में भारी मुश्किलें आ रही थीं। ऊँची-नीची ज़मीन बैलों के कराहे, जिसमें लिफ़्ट का काम हाथों से करना पड़ता था, के माध्यम से बालटियों पसीना बहा कर समतल की। हर तरफ जंगल ही जंगल होने के कारण हर घड़ी जंगली जानवरों आदि का भी डर बना रहता। प्रत्येक हलवाहक सिक्ख के पास एक लम्बा बरछा और एक कृपाण होती। यदि कोई जंगली जानवर— शेर, भेड़िया आदि हमला करता तो उसे बरछे से मार देते या कृपाण से सामना करते हुए अपनी व अपने बैलों की रक्षा करते।

सन् १९४७ के उजाड़े के बाद सर्वप्रथम सिक्खों ने कच्चे घर (छप्पर) बनाए। गन्ने की पताई (सूखी पत्ते) जलाते समय उठी आग की चिंगारी या दीये आदि की लौ से कई बार घर जल जाते और पुनः नये बनाने पड़ते। कई बार आंधी-तूफान में छप्पर उड़े और फिर नये बनाए। रोजाना दर्जनों की संख्या में साँप घरों में से निकाल कर मारे। १९८५-८६ ई. तक भी ज़हरीले अजगर साँप घर में आ घुसते थे। १९५०-५५ ई. में क्या हालात रहे होंगे, यह अंदाज़ा लगाना कोई कठिन बात नहीं हैं। इस बात की गवाह मेरे (संपादक) के साथ घटी एक घटना है। मेरा पैतृक गांव उत्तर प्रदेश में उत्तराखंड की सीमा से सटा हुआ है। मेरी आयु उस समय ४-५ वर्ष रही होगी, जब हमारे नदी के किनारे बने छप्पर (घर) में अजगर साँप घुस आया। उस समय मैं छप्पर के अंदर ही था। मेरी माता जी ने मुझे किसी तरह बाहर निकाला। फिर १०-१५ लोगों ने मिल कर अजगर सांप को बाहर निकाल उसका फन कुचला। कहने से तात्पर्य, बड़े कठिन हालात का सामना करते हुए सिक्खों ने उत्तर प्रदेश की बंजर ज़मीनों को पानी और पसीने से सींच कर उपजाऊ और आबाद किया है। जहाँ कभी घास तक नहीं उगता था, वहां आज लहलहाती फसल वाले हरे-भरे खेत हैं। किसानों में एक कहावत प्रचलित है कि जिस जमीन में घास नहीं उगती वहां फसल भी पैदा नहीं हो सकती, मगर सिक्ख किसानों ने अपनी सिरतोड़ मेहनत से इसे गलत साबित कर दिया है। बंजर कही जाने वाली जमीन में आज रबी व खरीफ की फ़सल के अतिरिक्त अन्य बहुत-सी फसलें पैदा

होती हैं। कच्चे घरों और फटे कपड़ों में गुज़ारा करने वाले सिक्ख गुरु-बताए मार्ग— 'नाम जपो, किरत करो, वंड छको' के धारक बन कर आज ख़ुशहाल जीवन जी रहे हैं। लगता है आज भारत की सत्ताधारी सरकार को सिक्खों की सिरतोड़ मेहनत से हासिल की गई कामयाबी बरदाश्त नहीं हो रही।

बहुत-सी सरकारें आई और गई, परन्तु ख़ुशहाल जीवन जी रहे इन सिक्खों को किसी ने कुछ नहीं कहा। जब से केंद्र में भाजपा सरकार आई है तब से इन सिक्खों के साथ धक्का होना शुरू हो गया है। विषय परिस्थितियों में ज़हरीले साँपों का सामना कर देश की बंजर ज़मीन को उपजाऊ बनाने वाले सिक्खों को इस बात का क्या इल्म था कि आने वाले समय में साँपों से भी ज्यादा ज़हरीली सरकारें अपने बच्चों को खा जाने वाली नागिन की तरह उन्हें निगलने का यत्न करेंगी। सरकारों का काम अपने नागरिकों की जान-माल की रक्षा करना होता है। आज अपने ही देश में बटवारे के उजाड़े के ७३ वर्ष बाद सिक्खों को फिर से उजड़ने का एहसास करवाया जा रहा है। सिक्खों को आज़ाद देश में पराधीनता और बेगानेपन का एहसास करवाया जा रहा है। आज ज़रूरत है कि सभी सिक्ख जत्थेबंदियां, सिक्ख बुद्धिजीवी और सिक्ख मीडिया पंजाब से बाहर बसते सिक्खों की जान-माल की रक्षा के लिए आगे आएं। सिक्ख वकील कानूनी कार्यवाही के लिए आगे आएं। सिक्खों की सिरमौर जत्थेबंदी शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटीश्री अमृतसर ने इस संवेदनशील मुद्दे पर तत्परता दिखाते हुए अपने स्तर पर एक जांच समिति गठित कर पीड़ित सिक्ख परिवारों को न्याय दिलाने के लिए कदम उठाए हैं। दूसरी तरफ शिरोमणि अकाली दल तथा अन्य सिक्ख जत्थेबंदियों ने भी (समाचार पत्रों के माध्यम से) इस घटनाक्रम की घोर निंदा की है और कूटनीतिक स्तर पर पीड़ित सिक्ख परिवारों को राहत पहुंचाने की बात की है। यह ज़मीन हड़प करने वाला काम कोई अचानक घटित घटनाक्रम नहीं, यह सरकार की सिक्ख-विरोधी नीति का हिस्सा है। आज जब सरकारें सिक्खों की ज़मीन को हाथ डाल रही हैं, यदि हम चुप बैठे रहे तो ये सरकारें कल को पंजाब से बाहर बसते सिक्खों के व्यापार, व्यापारिक अदारों, ट्रांसपोर्टों, फ़ैक्टरियों, कारखानों आदि को भी हथियाने की कोशिश करेंगी। पक्षपाती सरकारों का सिक्खों के प्रति यह रवैया देख कर सर मुहम्मद इकबाल का शेयर याद आ जाता है— ''मुद्दतें बीत गई हैं इस रंज-ओ-ग़म को सहते हुए। शर्म सी आती है इस वतन को वतन कहते हुए।''

ऐसे बेगानेपन के आलम में से सिक्खों के लिए आज़ाद भूखंड की माँग उठती रही है। इसमें कोई संदेह नहीं कि जैसे-जैसे सरकारों का सिक्खों के साथ धक्का बढ़ता जायेगा वैसे-वैसे यह माँग और भी प्रचंड होती रहेगी।

—सतविंदर सिंघ फूलपुर
फोन : *99144-19484*

हरिकिसन भयो असटम बल बीरा

*-डॉ. रूप सिंघ**

श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब जी का जन्म ७ जुलाई, १६५६ ई. को श्री गुरु हरिराय साहिब के घर 'शीश महल' कीरतपुर साहिब में हुआ। रामराय आप जी का बड़ा भाई था, जो बहुत ही चुस्त-चालाक और मक्कार नीतिवेत्ता था। गुरु-घर के कुछ मंसदों के साथ भी उसका संबंध था। श्री गुरु हरिराय साहिब जी का बड़ा पुत्र होने के कारण वह हर तरह से अपने आप को गुरुआई के योग्य जान इस पर अपना विरासती हक समझता था।

जब समय के बादशाह औरंगजेब ने श्री गुरु हरिराय साहिब जी को दिल्ली बुलाया तो गुरु जी ने रामराय को बादशाह से मिलने हेतु भेजा। रामराय को सख़्त हिदायत की गई कि गुरु-घर के आशय के विरुद्ध न कोई बात करनी और न ही माननी, चाहे इसके बदले में कितनी भी बड़ी कीमत क्यों न चुकानी पड़े। रामराय जब बादशाह से मिला तो उसने बादशाह से ख़ुशी हासिल करने के लिए बादशाह की बहुत ख़ुशामद की। उसने बहुत कुछ गुरु-आशय के विरुद्ध बोला। यहाँ तक कि श्री गुरु नानक साहिब की पवित्र बाणी की यह पंक्ति ''मिटी मुसलमान की पेड़ै पई कुम्हिआर'' बदल कर ''मिटी बेईमान की . . . '' पढ़ी और कहा कि ऐसा लिखने वाले की गलती से हुआ है। असली शब्द 'मुसलमान' नहीं 'बेईमान' है। यह गुरबाणी का घोर अपमान था, जिसकी किसी आम सिक्ख से भी आशा नहीं की जा सकती थी। जब श्री गुरु हरिराय साहिब जी को रामराय की इस गलत हरकत का पता चला तो उन्होंने हुक्म कर दिया कि हमारे माथे नहीं लगना अर्थात् हमारे सामने नहीं आना। गुरु जी ने सिक्ख संगत को आदेश किया कि वे रामराय के साथ किसी तरह का व्यवहार, मेल-जोल, बोल-चाल न करे। सिक्ख संगत ने गुरु-हुक्म को सहर्ष स्वीकार किया।

श्री गुरु हरिराय साहिब जी ने अपना अंतिम समय नज़दीक आया जान कर गुरुआई की महान ज़िम्मेदारी अपने छोटे सुपुत्र श्री (गुरु) हरिक्रिशन साहिब जी को सौंप दी। गुरुआई की ज़िम्मेदारी सौंपने से पहले श्री गुरु हरिराय साहिब जी ने श्री (गुरु) हरिक्रिशन साहिब जी को हिदायत की कि बादशाह औरंगजेब से दूरी बनाए रखना। गुरुआई पर विराजमान होते समय श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब जी की आयु केवल पाँच साल कुछ महीने की थी। गुरुआई के अधिकारी बनने के लिए आयु, रिश्ते और विरासत का कोई सम्बन्ध नहीं, गुरु-घर में योग्यता ही प्रधान है। श्री गुरु हरिराय साहिब जी के अकाल प्रस्थान कर जाने के बाद श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब गुरुआई पर विराजमान हुए। सिक्ख संगत गुरु-दर्शन कर निहाल होती। गुरु जी

**मुख्य सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर-१४३००६*

संगत को आध्यात्मिक उपदेश देते, उनकी आशंकाओं का निवारण करते और नाम-दान की बख्शिश करते। गुरु जी ने प्रचार हेतु मसंदों की ड्यूटी विभिन्न क्षेत्रों में लगाई।

रामराय की तरफ से श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब जी की विरोधता होनी स्वाभाविक थी, क्योंकि रामराय अपने आप को हर तरह से गुरुआई के योग्य समझता था। गुरुआई की रस्म के समय रामराय दिल्ली में था। रामराय के साथ कुछ मसंदों के हाथ पहले से ही मिले हुए थे और कुछ उसने लालच देकर अपने साथ कर लिए। मसंदों से रामराय ने कहा कि वे दूर-दूर जाकर यह प्रचार करें कि सिक्खों का आठवां गुरु रामराय है। मसंदों ने ऐसा प्रचार करना शुरू कर दिया और दसवंध इकट्ठा कर कुछ खुद छकते और कुछ रामराय को भेज देते। कुछ समय तो इसी तरह चलता रहा परन्तु झूठ की दुकान ज्यादा देर नहीं चल सकती थी। सिक्ख संगत को जब रामराय की कुचालों का पता चला तो उसने रामराय को गुरु मानने से इनकार कर दिया।

रामराय अपनी पेश न चलती देख बादशाह के दरबार में फ़रियादी हुआ और कहा कि मैं श्री गुरु हरिराय साहिब जी का बड़ा सुपुत्र हूं, इसलिए गुरुआई पर मेरा हक है। मेरा हक मार कर श्री (गुरु) हरिक्रिशन (साहिब) को गुरुआई सौंपी गई है। मुझे मेरा हक मिलना चाहिए। इस पर मेरा विरासती हक है। मेरा कसूर सिर्फ़ यही है कि मैं आप जी का वफ़ादार हूं। मेरे पिता जी शुरू से ही आपके विरुद्ध थे और उन्होंने मेरे छोटे भाई श्री (गुरु) हरिक्रिशन (साहिब) को गुरुआई देते समय यह आदेश किया है कि वह आपसे दूरी बनाए रखे।

औरंगजेब (जो बहुत ही चालबाज़ था) ने सोचा कि यदि गुरुआई मेरे वफ़ादार रामराय को मिल जाये तो मैं धर्म-परिवर्तन शान्तिपूर्ण ढंग से कर सकूँगा। यदि इन दोनों भाइयों में झगड़ा भी रहेगा, तो भी उसका फ़ायदा मुझे ही है। यह सोच कर औरंगजेब ने श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब जी को दिल्ली आने के लिए बुलावा भेजा। इधर रामराय ने सोचा कि यदि श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब जी दिल्ली आकर बादशाह से मिलते हैं तो मैं सिक्ख संगत में प्रचार करूँगा कि श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब जी ने गुरु-पिता के अंतिम हुक्म की उल्लंघना की है और यदि गुरु जी नहीं आते तो यह बादशाह के आदेश की उल्लंघना होगी। मेरे लिए दोनों हाथों में लड्डू हैं।

श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब जी ने गुरु-पिता के अंतिम आदेश के अनुसार बादशाह औरंगजेब से मिलने से साफ़ इनकार कर दिया। मिर्ज़ा राजा जय सिंघ ने गुरु जी को बुलावा भेजा कि गुरु जी दिल्ली आयें और सिक्ख संगत को दर्शन देकर निहाल करें। बादशाह से चाहे न मिलें। सिक्ख संगत की तरफ से प्रार्थना-पत्र मिलने पर गुरु जी ने दिल्ली जाने का फ़ैसला कर लिया। बहुत-सी स्थानीय संगत और माता जी के साथ गुरु जी दिल्ली की तरफ चल पड़े। संगत की संख्या दिनो-दिन बढ़ती देख कर गुरु जी ने हजूरी संगत के बिना बाकी संगत को वापस जाने के लिए कह दिया। पंजोखरा साहिब के स्थान पर गुरु जी ने पड़ाव किया और अहंकारी पंडित लाल चंद की आशंका के निवारण के लिए छज्जू नामक साधारण व्यक्ति से गीता के अर्थ करवाए। इस तरह गुरु जी सिक्ख

संगत को दर्शन देते हुए दिल्ली पहुँचे। दिल्ली में गुरु जी मिर्ज़ा राजा जय सिंघ के बंगले में ठहरे , जहाँ आजकल गुरुद्वारा बंगला साहिब सुस्थित है। रोज संगत गुरु-दर्शन हेतु आती और दर्शन कर तृप्त होती। औरंगजेब ने दर्शन करने की इच्छा ज़ाहिर की, परन्तु गुरु जी ने इनकार कर दिया। रामराय के दावे से सम्बन्धित गुरु जी के साथ बातचीत करने के लिए औरंगजेब ने एक अहलकार की ड्यूटी लगाई। गुरु जी ने अहलकार को स्पष्ट किया कि गुरुआई पर किसी का विरासती हक नहीं। इसके लिए कसौटी पर खरे उतरना ही योग्यता है। श्री गुरु नानक देव जी ने अपने दो सुपुत्रों को छोड़ गुरु-घर के प्रीतिवान सेवक भाई लहिणा जी को गुरुआई की ज़िम्मेदारी सौंपी। इसी तरह श्री गुरु अंगद देव जी और श्री गुरु अमरदास जी ने भी अपने सुपुत्रों को गुरुआई नहीं दी। श्री गुरु रामदास जी ने अपने बड़े दो सुपुत्रों को छोड़ सबसे छोटे सुपुत्र को गुरुआई की बख्शिश की। इसी तरह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने अपने सुपुत्रों और बड़े पोते को छोड़ कर छोटे पोते को गुरुआई प्रदान की। दूसरा, रामराय ने ऐसा घटिया काम किया है, जिसकी किसी भी गुरु-घर के प्रीतिवान से आशा नहीं की जा सकती।''

जब बादशाह को अहलकार के माध्यम से इन बातों का पता चला तो उसने रामराय का दावा ख़ारिज कर दिया। रामराय ने भी पेश न चलती देख अपनी जागीर (देहरादून) में ही डेरा लगाना ठीक समझा। श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब जी की आध्यात्मिक शक्ति की परख करने के लिए उन्हें कई तरह से अजमाया गया, जैसे रानी की पहचान करनी इत्यादि।

श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब जी कुछ समय दिल्ली में प्रचार की सेवा करते रहे। रोज़ाना नियम से दीवान सजता, संगत गुरु-दर्शन कर संतुष्टि प्राप्त करती। जो कुछ संगत दर्शनीय-भेटा भेंट करती, गुरु जी वह सब ज़रूरतमंदों में बाँट देते। श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब जी केवल तीन साल गुरुआई पर विराजमान रहे। इस समय में गुरु जी ने जिस आध्यात्मिक बलबीरता का प्रकटावा किया वह एक मिसाल है। चाहे रामराय की विरोधता थी या बादशाही हुक्म, गुरु जी अपने सिद्धांतों पर दृढ़ रहे। किसी तरह की संसारी बादशाही के भय को कबूल नहीं किया। यही कारण है कि भाई गुरदास जी (दूसरे) ने श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब जी को असटम (अष्टम) बलबीरा कहा है। भाई गुरदास जी कथन करते हैं :

हरिकिसन भयो असटम बल बीरा।
जिन पहुंचि देहली तजिओ सरीरा।
बाल रूप धरी स्वांग रचाइओ।
तब सहिजे तन को छोडि सिधाइओ।
इउ मुगलनि सीस परी बहु छारा।
वै खुद पति सो पहुंचे दरबारा।
औरंगे इह बाद रचाइओ।
तिन अपना कुल सभ नास कराइओ।
इउ ठहकि ठहकि मुगलनि सिरि झारी।
फुन होइ पापी वह नरक सिधारी।
इउं करि है गुरदास पुकारा।
हे सतिगुर मुहि लेहु उबारा॥ (वार ४१:२२)

बाला प्रीतम का जीवन-व्यक्तित्व

*-डॉ. सत्येंद्रपाल सिंघ**

गुरु नानक साहिब ने परमात्मा, जीवात्मा और जीवन के जो सिद्धांत संसार के सामने रखे वे सम्पूर्ण, संपुष्ट और स्पष्ट सिद्धांत थे। इन्हीं सिद्धांतों पर ही गुरु नानक साहिब के बाद शेष नौ गुरु साहिबान चले और अंततः वे श्री गुरु ग्रंथ साहिब में आलोकित हुए। गुरु नानक साहिब ने जिस धार्मिक सत्ता की स्थापना की उसे श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी तक सभी गुरु साहिबान ने अपने-अपने ढंग से प्रकाश प्रदान किया। सामान्यतः समय और परिस्थितियों के साथ सोच बदलती रहती है, किंतु सच अपरिवर्तित, अटल, शाश्वत है आदि काल से ही। गुरु नानक साहिब के दरबार का आधार सच था, इसी लिये उनके राज्य को अविचल राज्य की संज्ञा दी गयी। चोला बदलता गया किंतु सच नहीं। जो सच हमें गुरु नानक साहिब में देखने को मिला वही सच बाद के सभी नौ गुरु साहिबान में दिखा। सच की विस्मय उत्पन्न करने वाली मात्रा आज भी श्री गुरु ग्रंथ साहिब के माध्यम से निरंतर जारी है और उस अटल राज्य की गवाही दे रही है जिसे एक महत्वपूर्ण पड़ाव तक पहुंचाने का कार्य श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने किया।

श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब का पांच वर्ष की आयु में गुरुआई पर विराजमान होकर गुरु-परंपरा की महान विरासत को संभालना और आठ वर्ष से भी कम आयु में अपने उत्तरदायित्वों को बाखूबी अंजाम देते हुए इहलोक की यात्रा को सम्पूर्ण करना मानव-इतिहास की अनोखी घटना थी। इससे भी अधिक अद्भुत बात थी उनमें परिस्थितियों के अनुकूल सटीक निर्णय लेने की क्षमता और गुरु-पद की मर्यादा को बनाये रखना। इस बात की प्रबल संभावना थी कि श्री गुरु हरिराय साहिब अपने बड़े पुत्र रामराय को गुरुआई सौंपते। रामराय अति आत्मविश्वास के साथ-साथ अति महत्वाकांक्षा का शिकार हो गया और दिल्ली प्रवास के दौरान औरंगजेब को प्रभावित करने हेतु अपने पिता श्री गुरु हरिराय साहिब के आदेशों का भी उल्लंघन कर बैठा। श्री गुरु हरिराय साहिब ने निर्णय लिया कि वे भविष्य में कभी भी रामराय को मुंह नहीं लगायेंगे। जो गुरु-दरबार की मर्यादा कायम नहीं रख सका वह पुत्र होते हुए भी पुत्र नहीं रहा। यह एक बहुत बड़ा निर्णय था जिसके साक्षी श्री (गुरु) हरिक्रिशन साहिब भी बने और यह निर्णय उनके लिये बड़ा मार्गदर्शक बना। छोटी-सी उम्र में उन्होंने गुरु-घर के सम्मान की सर्वोच्चता को जान लिया था, जिसने उन्हें आंतरिक दृढ़ता प्रदान की :

पाइआ लालु रतनु मनि पाइआ।
तनु सीतलु मनु सीतलु थीआ
सतगुर सबदि समाइआ ॥१ ॥रहाउ ॥

**ई-१७१६, राजाजीपुरम, लखनऊ (यू. पी.)-२२६०१७, फोनः ९४१५९-६०५३३*

लाथी भूख त्रिसन सभ लाथी
चिंता सगल बिसारी ॥
करु मसतकि गुरि पूरै धरिओ
मनु जीतो जगु सारी ॥१ ॥
त्रिपति अघाइ रहे रिद अंतरि
डोलन ते अब चूके ॥
अखुटु खजाना सतिगुरि दीआ
तोटि नही रे मूके ॥२ ॥
अचरजु एकु सुनहु रे भाई
गुरि ऐसी बूझ बुझाई ॥
लाहि परदा ठाकुरु जउ भेटिओ
तउ बिसरी ताति पराई ॥ (पन्ना २१५)

श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब के जिस स्वरूप को संसार ने अचंभित होकर देखा वह वास्तव में सतिगुरु की कृपा और सतिगुरु की लीला ही थी। श्री गुरु हरिराय साहिब जब नितनेम करते थे, संगत को उपदेश देते थे तो श्री (गुरु) हरिक्रिशन साहिब भी उनके पास बैठते थे और उनकी कृपा प्राप्त करते थे। श्री (गुरु) हरिक्रिशन साहिब मात्र अपनी उपस्थिति ही नहीं दर्ज कराते थे बल्कि अपनी सामर्थ्य के अनुरूप श्री गुरु हरिराय साहिब के कार्यों में योगदान भी डाला करते थे, यह बात विशेष ध्यान देने योग्य है। अंत:प्रेरणा उनमें आरंभ से ही थी और वे गुरु तथा शबद से जुड़ने का अर्थ समझते थे। ऐतिहासिक साक्ष्यों के अनुसार वे दवाखाने के कार्यों में भी श्री गुरु हरिराय साहिब की सहायता किया करते थे। श्री गुरु हरिराय साहिब ने उन पर कृपा कर उन्हें ऐसी सुमति प्रदान की कि वे परमेश्वर से एकाकार हो गये और आश्चर्यजनक रूप से उन सारी बातों से ऊपर उठ गये जो एक सामान्य बालक में पायी जाती हैं। उन्हें गुरु-दरबार की अथाह श्रेष्ठता प्राप्त हो गयी जिससे उनकी बुद्धि और मन के सारे भ्रम समाप्त हो गये और वे संसार में सर्वोत्तम हो गये। उनका तन और मन दोनों पवित्र हो गये।

गुरुआई पर विराजमान होने के बाद श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने श्री गुरु हरिराय साहिब के काल से चली आ रही गुरु-मर्यादा को जारी रखा और उसी तरह शबद-गायन होता रहा। वे संगत को उपदेश देते थे ताकि आने वाली संगत को किसी कमी अथवा व्यवधान का अनुभव न हो। उन्होंने गुरु-शिक्षाओं के प्रचार-प्रसार की ओर भी ध्यान दिया। जिस समय श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब गुरुआई पर विराजमान हुए वह ऐतिहासिक दृष्टि से बड़ा ही संवेदनशील काल-अंतराल था। औरंगजेब ने बस अपने पैर जमाने शुरू ही किये थे और उसकी धर्मांध कुटिल नीतियां अभी पूरी तरह से खुलकर सामने नहीं आयी थीं। औरंगजेब की गुरु-घर के प्रति दृष्टि और नीयत में विकार आ चुका था। ऐसे समय में श्री गुरु हरिराय साहिब के बड़े पुत्र रामराय से उसकी निकटता और रामराय का गुरु-द्रोह परिस्थितियों को विषम बनाने के लिये पर्याप्त था। श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब की आयु छोटी होने का कारण इनकी क्षमता के प्रति संदेह गुरु-घर के विरोधियों का मनोबल बढ़ाने और कुचेष्टाएं करने के लिए उन्हें उकसाने का काम करता था। गुरु साहिब के सामने ऐसे समय में तीन मुख्य चुनौतियां थीं। एक चुनौती थी— सिक्ख संगत के विश्वास को बनाये रखना; दूसरी चुनौती थी गुरु-घर के विरुद्ध हो रहे षड़यंत्रों, विरोधों को

विफल करना और तीसरी चुनौती थी— गुरु-घर की प्रतिष्ठा को बनाये रखना।

श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब का पहला निर्णय था— किसी भी तरह के वाद-विवाद में न पड़ना। उन्होंने शांतिपूर्ण और संयमित ढंग से सिक्ख संगत को जोड़े रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी जो आने वाले संघर्ष के काल में गुरु नानक साहिब के मिशन का सुदृढ़ आधार बनी। उन्होंने गुरु-घर के प्रति सिक्ख संगत की आस्था को मजबूत किया जो रामराय और पूर्व के गुरु-घर-द्रोहियों की चालों से बिखर सकती थी। गुरु साहिब इन सभी चालों से निष्प्रभावित रहे और अपने लक्ष्य की ओर ध्यान देते रहे। उनमें गुरु नानक साहिब की ज्योति प्रकाशमान थी और उस प्रकाश ने उनकी राह को आसान बना दिया था। रामराय की द्रोहपूर्ण गतिविधियों से उनके मन में पल भर को भी उत्तेजना नहीं उत्पन्न हुई और न ही वे कभी भयभीत हुए। वे तो परमात्मा से एकाकार होकर अडोल और निर्लिप्त अवस्था में पहुंच चुके थे।

रामराय ने औरंगजेब से निकटता का लाभ उठाते हुए उसे भावनात्मक रूप से भी प्रभावित करने का प्रयास किया कि बड़ा पुत्र होने के नाते उसका गुरुआई पर पहला हक है। उसके साथ अन्याय हुआ है। औरंगजेब ने जब श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब से मिलने की इच्छा व्यक्त की तो गुरु साहिब ने मिलने से इनकार कर दिया। इसके बाद वे राजा जय सिंह और दिल्ली की संगत के आग्रह पर दिल्ली गये। औरंगजेब से मिलने से इनकार करना और बाद में दिल्ली जाना, यह निर्णय सिक्ख इतिहास में मील के पत्थर के समान है। औरंगजेब गुरु साहिब से मिलना चाहता था। इसके पीछे की मंशा शीशे की तरह साफ थी। औरंगजेब रामराय द्वारा गुरुआई को लेकर उठाये गये विवाद के बारे में चर्चा करना चाहता था जबकि गुरु साहिब खुद को ऐसे विवाद से पूरी तरह से दूर रखना चाहते थे। वे श्री गुरु हरिराय साहिब के आदेश का भी अनुपालन करना चाहते थे कि ऐसे लोगों को दर्शन न दिया जाये। दर्शन न देने और गुरुआई को किसी भी तरह के विवाद से परे रखने के निर्णय के पीछे किसी भी तरह की संवेगात्मक भावना, द्वेष-विचार अथवा अहमकाना (ख्याल) नहीं था, वरन् एक संपुष्ट सोच थी कि गुरुआई पर किसी का पैतृक अधिकार नहीं, यह योग्यता का विषय है। दुर्भावना के लिये गुरु-घर में कोई जगह नहीं है। गुरु-घर इसलिये पूज्य है क्योंकि इसके गुण महान हैं और यह न्याय का स्रोत है :

वडी वडिआई जा वडा नाउ ॥
वडी वडिआई जा सचु निआउ ॥
वडी वडिआई जा निहचल थाउ ॥
वडी वडिआई जाणै आलाउ ॥
वडी वडिआई बुझै सभि भाउ ॥
वडी वडिआई जा पुछि न दाति ॥ *(पन्ना ४६३)*

गुरु साहिब का स्थान ऊंचा था। वे न्याय करने वाले सत्यपुरुष थे और किसी भी तरह अपनी महानता से विचलित नहीं होने वाले थे। गुरु साहिब सब कुछ जानने-समझने वाले और उदारता से कृपा करने वाले थे। उनका औरंगजेब से न मिलना और फिर भी दिल्ली जाने का निर्णय करना इन गुणों की कसौटी पर पूरी तरह से खरा उतरने वाला निर्णय था। वे दिल्ली गये, क्योंकि वे संगत की

इच्छा सर्वोपरि मानते हुए उसे सम्मान देना जानते थे। राजा जय सिंह औरंगजेब का सहयोगी था। इसके बाद भी उसका आतिथ्य उन्होंने इसलिये स्वीकार किया क्योंकि राजा जय सिंह ने उन्हें भक्ति-भाव से आमंत्रित किया था। इससे यह भी सिद्ध हुआ कि सतिगरु निरवैर हैं, निरभउ भी हैं। दिल्ली आकर रामराय, जो उनसे उम्र में कहीं ज्यादा बड़ा और चालाक था, औरंगजेब के प्रभाव में आ गया था। गुरु साहिब ने दिल्ली आकर भी औरंगजेब से मिलने से इनकार कर यह सिद्ध कर दिया कि गुरु जी की धर्म-सत्ता सर्वोच्च है और अडोल है। दिल्ली आकर जिस तरह गुरु साहिब ने लोगों के दुख से स्वयं को जोड़ा और चेचक व हैजे से पीड़ित रोगियों की घर-घर जाकर सेवा की उससे ''वडी वडिआई जा पुछि न दाति'' को अपने आचरण से अक्षरश: प्रमाणित किया। उन्होंने एक ओर राजमद से स्वयं को अप्रभावित रखा वहीं दूसरी ओर जन की पीड़ा को अपनी पीड़ा बनाकर जन को निर्मलता प्रदान की :

संगति संत मिलाए ॥
हरि सरि निरमलि नाए ॥
निरमलि जलि नाए मैलु गवाए
भए पवितु सरीरा ॥
दुरमति मैलु गई भ्रमु भागा
हउमै बिनठी पीरा ॥
नदरि प्रभू सतसंगति पाई
निज घरि होआ वासा ॥
हरि मंगल रसि रसन रसाए
नानक नामु प्रगासा ॥ (पन्ना ७७४)

श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने दिल्ली जाकर गुरु नानक साहिब के दरबार की कीर्ति में चार चांद लगा दिये और रामराय द्वारा उत्पन्न किये गये भ्रम का अपने विवेक से, बड़ी सहजता से निवारण किया, जिस कारण औरंगजेब को रामराय की अर्जी खारिज करनी पड़ी। ऐसा लगता है कि नियति ने गुरु साहिब के काल को श्री (गुरु) तेग बहादर साहिब की आध्यात्मिक तैयारी के रूप में भी तय किया था। श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब इस बात को भली प्रकार जानते थे, इसी लिये उन्होंने अगले गुरु के रूप में उनका नाम लिया। श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने अगले गुरु के बारे में संकेत-मात्र किया। इसके तीन मुख्य कारण समझ में आते हैं। एक तो यह कि श्री गुरु तेग बहादर साहिब उस समय अंतर्ध्यान और गुप्तवास में थे। दूसरा, वे उनके दादा लगते थे तथा वरिष्ठ होने के नाते सम्मानयोग्य भी थे। तीसरा, गुरुआई से जुड़े विवादों पर सदा के लिये विराम लगाकर वे परिपक्व हो चुकी सिक्ख संगत को अवसर देना चाहते थे कि वो श्री गुरु तेग बहादर साहिब को स्वयं चिन्हित कर गुरुआई पर आसीन होने के लिये आग्रह करे। ऐसा हुआ भी, जिससे गुरु साहिब के एक और निर्णय पर परिपक्वता की मुहर लगी। आज दिल्ली में औरंगजेब और उसके राज्य का नामोनिशान नहीं है, कोई औरंगजेब का नाम लेने वाला नहीं है। उसी दिल्ली में राजा जय सिंह का वह महल जहां श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने निवास किया था 'गुरुद्वारा बंगला साहिब' बनकर गुरु नानक साहिब के अविचल राज्य के एक महत्वपूर्ण प्रकाश-केंद्र के रूप में उभरा है, जहां प्रतिदिन लाखों की संख्या में संगत शबद-गुरु के साथ जुड़कर निहाल होती है।

श्री अकाल तख्त साहिब की स्थापना

*-डॉ. बलवंत सिंघ**

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब का समय सिक्ख इतिहास में धर्म एवं राजनीति के सुमेल के लिए प्रसिद्ध है। जब भी कोई विद्वान सिक्ख पंथ के धार्मिक एवं राजनीतिक जीवन पर विचार करता है तो सहज ही उसका ध्यान श्री अकाल तख्त साहिब तथा इससे सम्बंधित मीरी-पीरी के सिद्धांत की तरफ खींचा चला जाता है। वास्तव में श्री अकाल तख्त साहिब तथा मीरी-पीरी के सिद्धांत ने सिक्ख पंथ के इतिहास पर ऐसी अमिट छाप छोड़ी है कि इनका परस्पर अटूट रिश्ता कायम हो गया है तथा इनको एक-दूसरे से अलग करके विचार करना असंभव-सा लगता है। श्री अकाल तख़्त साहिब तथा मीरी-पीरी के सिद्धांत ने सिक्ख पंथ के राजनीतिक दृष्टिकोण को निर्धारित करने में हमेशा ही अहम भूमिका निभाई है। आज भी सिक्ख पंथ की राजनीति तथा इसके राज्य करने के सम्बंधों को समझने के लिए मीरी-पीरी एक मूल सिद्धांत है तथा इसमें श्री अकाल तख्त साहिब की भूमिका एवं योगदान को नज़रंदाज नहीं किया जा सकता।

श्री अकाल तख्त साहिब की स्थापना श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब द्वारा सिक्ख पंथ के धार्मिक तथा राजनीतिक अधिकारों के लिए संघर्ष की प्रतीक है। इसकी स्थापना से सिक्ख पंथ की सैनिक जत्थेबंदी अस्तित्व में आई, जिसने मुगल सरकार की धार्मिक कट्टरता एवं जुल्म से सिक्ख पंथ को केवल सुरक्षा ही प्रदान नहीं की बल्कि इसको राजनीतिक शक्ति के रूप में उभरने में भी आधार तैयार किया। सिक्ख इतिहास के अनुसार सिक्ख पंथ को सैनिक रूप में जत्थेबंद करने का फैसला श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने श्री गुरु अरजन साहिब की मंशा के अनुसार ही किया था। श्री गुरु अरजन साहिब ने सिक्ख पंथ के विकास की पूर्वगामी मंज़िल को अनुभव करते हुए भाई सीगारू तथा भाई जैता जी जैसे शूरवीर सिक्खों को वचन किया था— ''असीं जो शसतर पकड़ने हैनि, सो गुरू हरिगोबिंद का रूप धार के पकड़ने हैनि। समां कलयुग दा वरतणा है। शसतरों दी विद्या कर मीर की मीरी खींच लैणी है तथा शबद की प्रीत समझ कर पीर की पीरी ले लैणी है। आप छठी पातशाही के हजूर रहना।'' पंचम पातशाह ने अपने शहीदी- संदेश में श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को यह हिदायत की थी कि :

सायुध होइ तखत पर राजहु।
जथा सकति सैना संग साजहु।

तख्त रचने तथा सैनिक जत्थेबंदी कायम करने से यह अभिप्राय बिलकुल नहीं था कि पूर्व सिक्ख गुरु साहिबान के आध्यात्मिक चिंतन को बिलकुल तिलांजलि दे दी जाये। श्री गुरु अरजन साहिब का इस सम्बंध में आदेश था कि :

**श्री गुरु ग्रंथ साहिब अध्ययन केंद्र, गुरु नानक देव युनीवर्सिटी श्री अमृतसर, फोन : ९८५५०-५७६२४*

ब्रिध आदिक सिखनि सनमानहु।
पुरा गुरनि की रीति परमानहु।
नई रीत इक रण की कीजहि।
अपर प्रथम सम गती चलीजहि।

गुरु साहिबान की बाणी में ऐसे अनेक प्रमाण प्राप्त हैं जिनसे उनके राजनीतिक विचारों तथा समकालीन शासन के बारे में दृष्टिकोण की काफी जानकारी मिलती है। श्री गुरु नानक साहिब तथा श्री गुरु अमरदास जी ने उत्तराधिकारी की 'योग्यता' को ही असली मापदंड माना। श्री गुरु नानक साहिब ने हाकिम श्रेणी को दैवी जीवन-मूल्यों को ग्रहण करने का उपदेश दिया। सिक्ख गुरु साहिब ने शासक वर्ग से प्रजा के प्रति सद्भावना, नेकी तथा न्याय की अभिलाषा करते हुए समकालीन राज्य-व्यवस्था में से रिश्वतखोरी, शोषण एवं बेइन्साफी को खत्म करने की मांग की। उनके नज़रिये में राज्य-अधिकार प्रभु की बख्शिश है तथा प्रभु-सत्ता का स्रोत भी परमात्मा खुद है। राजाओं के दैवी राज्याधिकार का खंडन कर नेकी एवं सच्चाई के रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित करने हेतु गुरु साहिब ने भारत के प्राचीन इतिहास में से उन राजाओं की कई उदाहरणें उद्धृत की, जिन्होंने दैवी राज्याधिकार के प्रति दावा करते हुए दुराचारी व्यवहार अपनाया और अंत में उनको प्रभु की दख़लंदाजी के कारण राज्याधिकार से वंचित होना पड़ा तथा सज़ाएं भी भुगतनी पड़ीं। इससे यह सिद्ध होता है कि अगर सत्ताधारी वर्ग दुनियावी अभिलाषाओं में खचित होकर नैतिक जीवन-मूल्यों से विहीन हो जाता है तो सिक्ख चिंतन के अनुसार उससे राज्य-सत्ता का अधिकार छिन जाता है। दूसरे शब्दों में राज्य-सत्ता मानवता के कल्याण के लिए है न कि इसके विनाश के लिए। अगर शासक अपने फर्ज़ की पालना में निष्फल सिद्ध होता है तो वह परमात्मा द्वारा प्रदत्त राज्याधिकार को गंवा लेता है। ऐसी स्थिति में सही सोच तथा दैवी आवेश प्राप्त व्यक्ति मानवता के भले के लिए शासक वर्ग को चुनौती देने तथा राज्य-सत्ता से अलविदा करने का अधिकार रखते हैं। एक तरह से ऐसे शासन के विरुद्ध संघर्ष करना नैतिक प्रजा का अधिकार ही नहीं दैवी फर्ज़ भी है। इस तरह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब का श्री अकाल तख्त साहिब की सृजना द्वारा बादशाह जहांगीर के पक्षपाती तथा ज़ालिमाना व्यवहार को चुनौती देना सिक्ख चिंतन के बिलकुल अनुकूल था। हिंदोस्तान पर बाबर के हमले के समय आम लोगों को, खास तौर पर औरतों को मुगल सैनिकों के हाथों बड़े दुख तथा अपमान सहन करना पड़ा। शासक वर्ग का प्रजा को विदेशी हमलावरों से सुरक्षा प्रदान करना एक पावन फर्ज़ है। इसी कारण श्री गुरु नानक साहिब ने मुगल हमले के दौरान लोगों के दुख-दर्द तथा देश की बर्बादी का जिम्मेदार लोधी शासन को ठहराया। उन्होंने बाबर की भी कड़े शब्दों में निंदा की, क्योंकि उसके सैनिकों ने भोले-भाले, बेसहारा तथा शस्त्रहीन लोगों पर जुल्म कर अमानवीय व्यवहार का परिचय दिया था। श्री गुरु नानक साहिब के समकालीन शासकों की भूमिका की निंदा यह दर्शाती है कि वे शासक वर्ग के अनुचित व्यवहार की नुक्ताचीनी तथा इसके बारे में अपनी राय व्यक्त करने के अधिकार से कभी भी दस्त-बर्दाद (संकुचित) नहीं हुए थे। वास्तव में

अत्याचारी शासन के प्रति नागरिकों के दृष्टिकोण तथा इसके विरुद्ध आवाज़ बुलंद करने के अधिकार को निश्चित दिशा प्रदान कर दी थी। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने श्री अकाल तख्त साहिब के रूप में ऐसी संस्था स्थापित की, जहां किसी राज्य की नीतियों पर विचार-विमर्श करने के उपरांत सिक्ख पंथ के उसके प्रति रवैये को कोई दिशा-निर्देश दिया जा सके।

सिक्ख गुरु साहिबान लोगों के शासक वर्ग के प्रति खुशामदी तथा गैर-जिम्मेदाराना व्यवहार से भी चिंतित थे। वे प्रजा को अपने अधिकारों तथा कर्त्तव्यों के प्रति जागृत करने के इच्छुक थे। इस सम्बंध में श्री गुरु नानक साहिब का विचार है कि अगर राजा प्रजा की मांगों को स्वीकार करता है तो प्रजा का राजा के साथ प्राकृतिक तथा नियमित सम्बंध स्थापित हो जाता है। दूसरी तरफ, गुरु साहिब प्रजा के उस व्यवहार के प्रति भी फिक्रमंद थे, जिसमें लोग अज्ञानता के कारण हाकिम श्रेणी के कई नाजायज़ हुक्म मानने के अलावा उन्हें रिश्वत भी देते थे। गुरु साहिब ने जनता को अपमान करवाने की बजाय स्वाभिमान भरा जीवन जीने का उपदेश दिया। उन्होंने उच्च आदर्शों के लिए जीवन न्यौछावर करने को शोभनीय कारनामा बताया। प्रजा को कायरता त्याग कर निडर बनने तथा सत्य को सत्य कहने की ज़रूरत पर बल दिया। ऐसे विचारों ने प्रजा को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होने तथा उच्च आदर्शों की प्राप्ति के लिए पहलकदमी करने की प्रेरणा दी। श्री गुरु नानक साहिब के इन विचारों में भ्रष्ट तथा नैतिक जीवन-मूल्यों से विहीन राजनीति के विरुद्ध बगावत एवं ज़ालिम तथा लोक-विरोधी शासन के विरुद्ध आत्म-रक्षा हेतु संघर्ष के बीज विद्यमान थे। ऐसे बीज की उपज थी श्री अकाल तख्त साहिब की स्थापना, जिसने लोगों को अपने अधिकारों के प्रति चैतन्य होने तथा इनकी रक्षा करने के लिए उत्साह प्रदान किया।

मीरी-पीरी के सिद्धांत को अमल में लाने के लिए इसको संस्थाई आधार प्रदान करना अति आवश्यक था। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब द्वारा श्री अकाल तख्त साहिब की स्थापना इस दिशा में बहुत ही उल्लेखनीय एवं महत्त्वपूर्ण कार्य था। सिक्ख रिवायत के अनुसार श्री गुरु अरजन देव जी की शहीदी के उपरांत श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की गुरुआई के लिए दसतारबंदी की रस्म हुई, जिसमें श्री अमृतसर शहर के पंचों के अलावा मुख्य मसंद भी शामिल हुए। इस अवसर पर श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने गुरुआई की परंपरागत वस्तुओं को तोशाखाने भेजने के हुक्म देते हुए मीरी-पीरी की प्रतीक दो कृपाणें धारण कर लीं। मुगल सरकार के विरोधी रवैये के कारण श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब सिक्ख पंथ को सुरक्षा प्रदान करने की अपनी जिम्मेदारी से भली-भांति वाकिफ थे। फलतः श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने मीरी-पीरी के सिद्धांत को अमल में लाने तथा सिक्ख पंथ के सांसारिक नेता के रूप में अपनी भूमिका निभाने के लिए श्री अमृतसर में श्री हरिमंदर साहिब के समक्ष श्री अकाल तख्त साहिब की स्थापना का महान उद्यम किया।

श्री अकाल तख्त साहिब अपने मौलिक रूप में बादशाहों के तख़्त की तुलना में साधारण किंतु

ऊंचा सिंहासन था, जो बाद में सिक्ख पंथ की दुनियावी प्रभुता के स्रोत तथा प्रतीक के रूप में उभर कर सामने आया। श्री अकाल तख्त साहिब की स्थापना के बाद सबसे उल्लेखनीय तथ्य यह है कि यह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के दृढ़ विश्वास को प्रकट करता है कि उनकी प्रथम वफादारी अकाल पुरख के लिए है न कि मुगल बादशाह या दुनिया के किसी अन्य ताज या तख़्त के लिए। फलस्वरूप सिक्खों के लिए भी यह प्रश्न था कि वे मुगल राज्य या श्री अकाल तख्त साहिब के प्रति वफ़ादारी में से किसी एक का चुनाव करें। यहां यह उल्लेख करना भी अति आवश्यक है कि श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब द्वारा स्थापित संस्थाओं पर प्रचलित की गई रिवायतें महज़ एक इत्तफाकिया घटना या ऐतिहासिक मज़बूरी का परिणाम नहीं थीं, बल्कि इनके प्रचलन के पीछे प्रेरणा-स्रोत दैवी आवेश था।

सिक्ख रिवायत के अनुसार श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की तख़्त-नशीनी के अवसर पर उन्होंने शाही पोशाक के साथ-साथ दसतार पर कलगी भी सजाई हुई थी, मीरी-पीरी की दो कृपाणें भी पहनी हुई थीं। जब श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब सिक्ख पंथ के सांसारिक अगुआ की भूमिका निभाने के लिए पूरे राजसी ठाठ-बाठ सहित श्री अकाल तख्त साहिब पर सुशोभित हुए तो भट्टों एवं ढाडियों ने उनकी महिमा में वारें गायन की।

गुरु साहिब अपने नित्य-कर्म के अनुसार स्नान करने के उपरांत भजन-बंदगी में लीन हो जाते। सुबह होने पर श्री हरिमंदर साहिब में कीर्तन का आनंद लेते। तत्पश्चात श्री अकाल तख्त साहिब पर दरबार सजाया जाता। देश-विदेश से गुरु-दरबार में आने वाली संगत भी इस दरबार में शामिल होती। मुख्य मसंद अपनी संगत सहित दसवंध-भेंटा तथा सेवा भी इसी दरबार में भेंट करते थे। सिक्ख संगत के सामूहिक एवं निजी, धार्मिक एवं सांसारिक मसलों पर विचार होती। श्री अकाल तख्त पर सजे दरबार में श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब सिक्खों के निजी तथा पंथक मसलों पर अपने फैसले सुनाया करते थे। उन्होंने सिक्खों को अपने आपसी झगड़े श्री अकाल तख्त साहिब पर पेश होकर निपटाने की प्रेरणा की। अपने रोज़ाना के जीवन में श्री अकाल तख्त साहिब तथा श्री हरिमंदर साहिब की महत्ता को उन्होंने इस प्रकार बयान किया :

शांत रूप हवै मै रहो हरिमंदर के माहि।
रजो रूप इह ठां रहे अकाल तखत सुख पाइ।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने श्री अकाल तख्त साहिब से मीरी-पीरी की मर्यादा का संचालन करने के लिए गुरमति के सुप्रसिद्ध विद्वान भाई गुरदास जी को जिम्मेदारी सौंपी। एक तरह से भाई गुरदास जी श्री अकाल तख्त साहिब के पहले जत्थेदार के रूप में नियुक्त हुए। उनका इस कार्यभार को संभालना श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी की दूरंदेशी को दर्शाता है। गुरु जी इस बात से भली-भांति अवगत थे कि सिक्ख पंथ में राजनीति तथा धर्म के सुमेल के बारे में उठी आशंकाओं को, गुरमति विद्या के सूक्ष्म भेदों से अवगत व्यक्ति ही निवृत्त कर सकता है।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने सिक्खों में वीर रस पैदा करने के लिए श्री अकाल तख्त साहिब पर योद्धाओं की बहादुरी के कारनामों से भरपूर, बदी

तथा बेइन्साफी के विरुद्ध संघर्ष को प्रकट करती वारें गायन करने की प्रथा चलाई। इस कार्य के लिए भाई अबदुल्ला तथा भाई नत्था मल्ल ढाडियों की सेवाएं गुरु-दरबार के लिए प्राप्त की गईं। जोशीली वारें गाने से श्री गुरु अरजन देव जी की शहीदी के उपरांत भयभीत तथा निराश हुए सिक्खों में नया जोश एवं उत्साह पैदा होना आरंभ हुआ। उनको एहसास होने लगा कि धार्मिक फर्ज़ अदा करने के अतिरिक्त उन्होंने बदी के विरुद्ध संघर्ष में नैतिक जिम्मेदारियां भी निभानी हैं। इस प्रकार श्री अकाल तख्त साहिब का निर्माण व इसकी परंपराओं ने सिक्ख पंथ के आत्मविश्वास को पुनः बहाल करने के लिए बड़ी अहम भूमिका निभाई। उल्लेखनीय है कि संकटकालीन स्थिति में सिक्ख पंथ के मनोबल को बनाए रखने में श्री अकाल तख्त साहिब सदैव ही प्रमुख प्रेरणा-स्रोत के रूप में भूमिका निभाता है।

मीरी-पीरी की नीति के अनुसार सिक्ख पंथ को सैनिक शक्ति में जत्थेबंद करना आवश्यक था तथा इस उद्देश्य के लिए सैनिक साधनों की आवश्यकता थी। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने श्री अकाल तख्त साहिब से देश-विदेश की सिक्ख संगत को हुकमनामे जारी किए कि गुरु-दरबार में धन-पदार्थ के साथ-साथ शस्त्र एवं घोड़े भी भेंट किए जायें। हुक्म हुआ कि जो सिक्ख बढ़िया हथियार एवं उत्तम नस्ल के घोड़े लेकर आएगा वह गुरु-घर की कृपा का विशेष पात्र होगा। सिक्ख पंथ श्री गुरु अरजन देव जी की शहीदी के बाद के हालात को अपने धर्म में हस्तक्षेप समझता था। सिक्खों ने यह महसूस कर लिया था कि मुगल सरकार के जुल्म तथा अत्याचार से आत्म-रक्षा के साथ-साथ बेइन्साफी के विरुद्ध संघर्ष के लिए सैनिक साधनों का इस्तेमाल जायज़ है। फलस्वरूप सिक्खों ने मुगलों से सुरक्षा की उम्मीद छोड़कर श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब पर विश्वास प्रकट करते हुए सिक्ख पंथ को सैनिक पक्ष से आत्मनिर्भर बनाने के लिए अपनी सेवाएं अर्पित करनी शुरू कर दीं। कुछ दिनों में ही माझा, मालवा व दुआबा में से ४०० शूरवीर सिक्ख श्री अकाल तख़्त साहिब पर श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के समक्ष हाज़िर हुए। जंगी साज़ो-सामान भी साथ-साथ इकट्ठा होना शुरू हो गया। गुरु साहिब ने सिक्ख सैनिकों को सौ-सौ के जत्थों में संगठित कर प्रत्येक पर एक-एक जत्थेदार नियुक्त कर दिया। सिक्ख सैनिकों को गुरु साहिब द्वारा एक-एक घोड़ा तथा हथियार प्रदान किया गया। इस तरह सिक्ख पंथ का मौलिक सैनिक प्रबंध श्री अकाल तख्त साहिब पर अस्तित्व में आया।

श्री अकाल तख्त साहिब पर श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी के पास बादशाहों की तरह ५२ अंगरक्षकों की एक सैनिक टुकड़ी सेवा में हमेशा सावधान रहती थी। 'दबिस्तानि-मज़ाहिब' के लेखक के अनुसार— ''श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी की फौज में उस समय ८०० घोड़े, ३०० घुड़सवार तथा ६० तोपची थे। गुरु साहिब ने अपनी सैनिक शक्ति को संगठित करने के लिए धार्मिक पक्षपात से ऊपर उठकर मुस्लिम सैनिकों को भी अपनी सेना में भर्ती किया। जो भी कोई मुगल सैनिक किसी अन्य जगह से निकाला जाता था, वह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के पास आकर पनाह ले लेता था। तथाकथित दलित वर्ग से सम्बंधित लोग,

जिनको हाकिम श्रेणी गंवार समझकर सैनिक पेशे के योग्य नहीं समझती थी, वे सिक्ख सेना में शामिल होने लगे।'' मुख्य रूप से सिक्खों ने धार्मिक जज़्बे के अधीन स्वेच्छा से बिना किसी पारिश्रम के सैनिक सेवाएं अर्पण की थीं। पठान सैनिकों को तनख्वाह पर भर्ती किया गया था। सैनिक पक्ष से श्री अमृतसर की हिफाजत के लिए लोहगढ़ किले के निर्माण के प्रबंध किए गए।

सिक्खों को मानसिक रूप से सैनिक संघर्ष में शामिल होने, उन्हें सैनिक प्रकृति का बनाने की भी आवश्यकता थी। इसी उद्देश्य के लिए श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने श्री अकाल तख्त साहिब पर जंगी खेलों के कौतुक दिखाने की प्रथा चलाई। धार्मिक कार्यों से निपटकर शिकार खेलना शुरू किया। इस उद्देश्य के लिए अच्छी नस्ल के घोड़े, कुत्ते तथा बाज़ पालने आरंभ किए। जंगी खेलों एवं शिकार करने की परिपाटी (प्रथा) ने सिक्खों को शारीरिक रूप से हृष्ट-पुष्ट बनाने के अलावा उनके लिए जंगी मश्कों तथा सैनिक सिखलाई का माहौल पैदा किया। इन रिवायतों से भारतीय समाज पर हिंसा का जवाब हिंसा में न देने के अंधविश्वास के कारण पड़े बुरे प्रभाव को दूर कर सिक्खों में आत्मविश्वास पैदा कर जुझारू भावना पैदा करनी आसान हो गई।

श्री अकाल तख्त साहिब पर मीरी-पीरी के सिद्धांत के अनुसार आरंभ की गई मर्यादा से सिक्खों को यह यकीन हो गया कि उन्होंने सिक्ख पंथ को मुगल सरकार के जुल्म से बचाने के लिए सैनिक सेवाएं भी धार्मिक फर्ज़ के रूप में ही अदा करनी हैं। धीरे-धीरे सिक्खों में आत्म-रक्षा हेतु सैनिक संघर्ष की भावना उत्पन्न हो गई। फलस्वरूप श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के पास मुगल सरकार के साथ टक्कर लेने के लिए सैनिक जत्थेबंदी कायम हो गई। असल में श्री अकाल तख्त साहिब के समूचे माहौल ने सिक्ख पंथ में वीरता तथा स्वाभिमान की चाह भर दी। सिक्ख पंथ में पैदा हुई वीरता का उद्देश्य किसी को मारना या कत्ल करना नहीं था बल्कि जुल्म एवं आक्रमण का वीरता से जवाब देते हुए जरूरत पड़ने पर खुशी-खुशी अपना आप कुर्बान करना था। सिक्ख पंथ के धर्मिक-सामाजिक जीवन में से ऐसी नयी सामाजिक प्रणाली अस्तित्व में आई जिसका मंतव्य मात्र राज्य स्थापित करने का लालच नहीं था, बल्कि अपने प्यारे (गुरु) के लिए मर-मिटने की पावन भावना थी।

नि:संदेह सिक्खों ने अपने धर्म की पवित्रता तथा सुरक्षा के लिए इतिहास में बहादुरी के दिल दहला देने वाले कई लासानी कारनामे कर दिखाए हैं। सिक्ख पंथ में बहादुरी एवं कुर्बानी की रिवायतें स्थापित करने में श्री अकाल तख्त साहिब का अहम योगदान रहा है। सिक्ख पंथ में बदी तथा बेइन्साफी के विरुद्ध सैनिक संघर्ष की जायज़करारी श्री अकाल तख्त साहिब के फलसफे में से ही ढूंढी जा सकती है। सिक्ख पंथ के सैनिक प्रबंध का इतिहास श्री अकाल तख्त साहिब के साथ बड़ा गहरा सम्बंध रखता है। यह संस्था हमेशा ही सिक्ख सैनिकों के लिए बहुत बड़ी प्रेरणा-स्रोत रही है।

भाई मनी सिंघ जी का शहीदी घराना

-प्रो. पिआरा सिंघ पदम (दिवंगत)

पचास वर्ष गुरु-चरणों में तथा पच्चीस वर्ष सिक्ख पंथ की अगुआई में लगाने वाले भाई मनी सिंघ जी (जन्म चेत सुदी द्वादशी, १७०१ बिक्रमी; शहीदी आषाढ़ सुदी पंचमी, १७९१ बिक्रमी) का व्यक्तित्व विचित्र किस्म का है। वे धर्म के लिए स्वयं ही शहीद नहीं हुए, बल्कि उनके बुजुर्गवार दादा, भाई, पुत्र, पोते तथा अन्य सम्बंधियों ने भी खुशी-खुशी शहादत प्राप्त की। भाई मनी सिंघ जी के बाबा भाई बल्लू राव ने गुरु का चक्क (श्री अमृतसर) की लड़ाई में श्री गुरु अरजन देव जी को शहीद करने वाले मुगल जरनैल मुर्तज़ा खान को रण-क्षेत्र में मार-मुकाकर शहादत दी। भाई बल्लू राव के छोटे भ्राता भाई नानू राव ने रुहीले की जंग में जूझकर शहादत प्राप्त की थी। इसी तरह इनके भ्राता भाई दरीए की संतान ने गुरु-घर की खातिर अपने प्राण न्यौछावर किए। भाई दरीए का पुत्र भाई आलम सिंघ १ आश्विन, १७५७ बिक्रमी को निरमोहगढ़ (श्री अनंदपुर साहिब) में जूझते हुए शहीद हुआ था।

भाई बल्लूराव के १२ पुत्र थे— भाई मलूका, भाई माई दास, भाई रूड़ीआ, भाई रूपीआ, भाई जैमल, भाई बीरीआ, भाई नठीआ, भाई नेता शाहू, भाई सुंदर, भाई माधो, भाई रय्या, भाई सुहेला। एक पुत्री बीबी मलूकी थी जो भाई सुखीए मांडन (राठौर) को ब्याही हुई थी। भाई सुखीए मांडन मराझ की जंग में शहादत प्राप्त कर गया था।

भाई माधो तथा भाई सुहेला करतारपुर की जंग में शहीद हो गए थे। भाई माई दास शाहजहां के समय में अच्छे सरकारी पद पर तैनात थे। इनकी दो पत्नियों (मधुरी बाई तथा लडिकी) की कोख से १२ पुत्र थे :— भाई जेठा, भाई दिआला, भाई मनी राम, भाई दान चंद, भाई मान चंद, भाई अमर चंद, भाई रूप चंद, भाई जगत चंद, भाई सोहण चंद, भाई लहिणा, भाई राय चंद तथा भाई हरी चंद। भाई अमर चंद के अलावा शेष ११ भाई शहीदी-मार्ग के पथिक बने। भाई जेठा तथा भाई रूप चंद ९ कार्तिक, १७६८ बिक्रमी अलोवाल (लाहौर) के मुकाम पर ३८ साथियों सहित शहीद हुए। भाई दिआला जी देग के खौलते हुए पानी में बिठाकर दिल्ली में शहीद किए गए। भाई मनी सिंघ जी बंद-बंद कटवा कर लाहौर में शहीद हुए। इनके साथ भाई जगत सिंघ के अलावा भाई जेठे के पुत्र भाई भूपत सिंघ की आंखें निकाल कर, भाई आलम सिंघ तथा उनके पुत्र भाई गुलज़ारा सिंघ की चमड़ी उतार कर तथा अपने बड़े पुत्र भाई चित्र सिंघ तथा भाई गुरबख़श सिंघ और साथ ही चाचा नठीए के पुत्र भाई संगत सिंघ एवं भाई रण सिंघ आदि कई नौजवान सिक्ख शहीद किए गए थे। भाई चित्र सिंघ को चरखड़ी पर चढ़ाया गया था। भाई हठी चंद १८ आश्विन, १७४५ बिक्रमी को भंगाणी की जंग में शहीद, भाई सोहण चंद २२ चेत, १७४७ बिक्रमी को नादौण की जंग में शहीद, भाई लहिणा सिंघ २३ फाल्गुन, १७५२ बिक्रमी को गुलेर की जंग में शहीद, भाई दान सिंघ चमकौर साहिब में

शहीद, भाई मान सिंघ ६ वैसाख, १७६५ बिक्रमी को चित्तौड़ में शहीद तथा भाई राय सिंघ ने अपने दो पुत्रों— भाई सीतल सिंघ तथा भाई महां सिंघ सहित श्री मुकतसर साहिब में शहीदी प्राप्त की थी। भाई राय सिंघ के अन्य दो पुत्रों— भाई सुक्खा सिंघ लोहगढ़ (श्री अनंदपुर साहिब) तथा भाई बाघ सिंघ श्री अनंदपुर साहिब में जूझते हुए शहीद हुए थे।

भाई मनी सिंघ जी के १० पुत्र थे— भाई चित्र सिंघ, भाई बचित्तर सिंघ, भाई उदे सिंघ, भाई अनिक सिंघ, भाई अजब सिंघ, भाई अजाइब सिंघ, भाई गुरबखश सिंघ, भाई भगवान सिंघ, भाई बलराम सिंघ तथा भाई देसा सिंघ। पहले आठों ने शहीदी प्राप्त की। भाई चित्र सिंघ तथा भाई गुरबख़श सिंघ पिता जी के साथ शहीद, भाई बचित्तर सिंघ कोटला निहंग खां, भाई उदे सिंघ शाही टिब्बी के पास लड़कर शहीद, भाई अनिक सिंघ, भाई अजब सिंघ, भाई अजाइब सिंघ तीनों चमकौर साहिब में शहीद, भाई भगवान सिंघ इनसे पहले ही श्री अनंदपुर साहिब की जंग में जूझकर शहीद हुए थे।

भाई चित्र सिंघ के पुत्र— भाई केसो सिंघ पौष, १७६८ बिक्रमी में बिलासपुर, भाई सैणा सिंघ साढौरा तथा भाई हाठू सिंघ चेत, १८१५ बिक्रमी में सरहिंद में शहीद, भाई बचित्तर सिंघ का पुत्र भाई संग्राम सिंघ चप्पड़चिड़ी की जंग में तथा दूसरा पुत्र भाई राम सिंघ बाबा बंदा सिंघ बहादुर के साथ आषाढ़, १७७३ बिक्रमी में दिल्ली में शहीद हुए। इसी प्रकार भाई उदे सिंघ के दो पुत्र— भाई महिबूब सिंघ एवं भाई फ़तहि सिंघ चप्पड़चिड़ी की जंग में लड़े तथा भाई अलबेल सिंघ एवं भाई मोहर सिंघ साढौरा की जंग में।

भाई मनी सिंघ जी का चचेरा भाई नठीआ था। भाई नठीए के वीर सपूत थे— भाई भागू, भाई कुरीआ, भाई बाजू, भाई रणसी, भाई सामा, भाई सुक्खा, भाई संता तथा भाई संगत। यही सिंघ सजकर भाई भगवंत सिंघ, भाई कौर सिंघ, भाई बाज़ सिंघ, भाई शाम सिंघ आदि कहलाए तथा बाबा बंदा सिंघ बहादुर के साथ ही दिल्ली में शहीद किए गए। भाई नठीए का एक पुत्र भाई लाल सिंघ १७६७ बिक्रमी में सरहिंद में शहीदी पा गया था। चमकौर साहिब में शहीदी पाने वाला आखिरी सिंघ भाई संत सिंघ बंगेशरी भी इनका ही बेटा था।

१८०२ बिक्रमी में भाई भीम सिंघ भट्ट ने इस घराने के प्रवर्तक शहीदों के बारे में एक प्रभावशाली पउड़ी गाकर सुनाई थी :

जल्हाने पंवार बंस जल्हे का,
चहुंकुंटी नांउ तउ दा परिआ।
जस गाऊ तउ बाबे बल्हू का,
जूझि सूरा रण भीतर मरिआ।
जस गाउं तऊ दादे जेठा सिंघ का,
भाई पुत्त साका जिह करिआ।
धंन धंन दयाल दास जस तऊ का,
रिधि चुगत्ते देगे भीतर धरिआ।
धंन धंन मनी सिंघ जस तऊ का,
बंद बंद कटि पोशिश उखरिआ।
बचितर सिंघ जस तऊ का गाऊं,
सांहवे जूझा नहि तऊ डरिआ।
धंन धंन उदे सिंघ जस तऊ का,
दवादस घरी इकेला लरिआ।
घोड़ा दान दीओ तउ उजल,
भटों का मूंड भागू सिंघ भरिआ।
भीम सिंघ जस जोड़ के भणिआ,
साल अठारां सै दो गांव सिखिआड़े भीतर ररिआ।
बेल बधे तउ बीर संग्राम सिंघ की,

भट्ट गावैं दर तउ ते खड़िआ।

(भट्ट वही तलउंढा, परगना जींद)

भाई मनी सिंघ जी की भूआ का वंश : यह भूआ बीबी मलूकी राठौर राजपूतों के सुखीए मांडन के साथ ब्याही हुई थी। भट्टों ने इसकी महिमा करते हुए यह भी लिखा है कि अकबर ने इसको अपनी पुत्री कहकर सम्मान दिया तथा ताम्र-पत्र पर निशान नगाड़े की बख्शिश लिखकर दी थी। यह परिवार पहले सोधरे (वज़ीराबाद) रहता था। बाद में इसके पुत्र-पोते लाडवा (थानेसर) आ गए थे। नत्थू के दो पुत्र थे— उदा व रामा। उदे का पुत्र मांडन था। मांडन का पुत्र सुखीआ, जो भाई मनी सिंघ जी का फूफा लगता था। आगे सुखीए के बेटे— सहसा, तेगा, रामा तथा मक्खण थे। रामे के पुत्र थे— जीता सिंघ, नेता सिंघ तथा बज्जर सिंघ। आगे जीता सिंघ के ७ पुत्र थे— भाई हिंमत सिंघ, भाई सेवा सिंघ, भाई मोहर सिंघ, भाई मान सिंघ, भाई प्रसंन सिंघ, भाई अनूप सिंघ तथा भाई केहर सिंघ। भाई हिंमत सिंघ, भाई सेवा सिंघ, भाई मोहर सिंघ तीनों ही पिता के साथ निरमोहगढ़ में जूझते हुए शहीद हुए थे। भाई मान सिंघ गंभीर नदी के किनारे बघौर में शहीद हो गए थे। भाई प्रसंन सिंघ, भाई अनूप सिंघ तथा भाई केहर सिंघ तीनों अल्लेवाल के मुकाम पर शाही हुक्म से अन्य साथियों सहित धरती में गाढ़कर शहीद कर दिए गए थे। भाई मान सिंघ का पुत्र भाई चानण सिंघ भी इनमें से एक था। भाई नेता सिंघ का बेटा भाई आलम सिंघ तथा भाई कीरत सिंघ का बेटा भाई फ़तहि सिंघ भाई मनी सिंघ जी के साथ शहीद हुए थे। भाई नेता सिंघ का दूसरा बेटा भाई कान्ह सिंघ १७६० बिक्रमी में श्री अनंदपुर साहिब की जंग में शहीदी पा गया था। इसी का तीसरा पुत्र भाई तारू सिंघ चप्पड़चिड़ी की जंग में शहीद हुआ और साथ ही भाई बज्जर सिंघ। भाई बज्जर सिंघ श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का शस्त्र-विद्या का उस्ताद था। इसकी पुत्री बीबी सुभिखां भाई आलम सिंघ (गुरु जी के मुसाहिब) के साथ ब्याही हुई थी, जो सरसा नदी के किनारे जंग में शहीद हुई। भाई आलम सिंघ चमकौर साहिब की जंग में शहीद हुआ था और साथ ही इसके दो पुत्र— भाई अमोलक सिंघ और भाई मोहर सिंघ भी।

उपरोक्त वंश में से सहसे का पुत्र अड़ू तथा इसके आगे गुल्लू, मलूका तथा भूरा तीन पुत्र थे। भूरे का पुत्र मुरारी था। यह परिवार माछीवाड़ा में निवास रखता था। आगे मुरारी के भाई छबील सिंघ, भाई भीखा सिंघ आदि थे। भाई छबील सिंघ अपने दो पुत्रों— भाई गुरमुख सिंघ तथा भाई संगत सिंघ सहित श्री अमृतसर की जंग में जूझकर शहीद हुआ था। गुल्लू का बेटा भाई दिआल सिंघ अगंमगढ़ की रणभूमि में शहीदी प्राप्त कर गया था। भाई भीखे का पुत्र भाई माही सिंघ तथा भाई दरगाही सिंघ ९ आश्विन, १७६९ बिक्रमी को सांबा के मुकाम पर (परगना जम्मू) लोगड़ (फूस) में लपेटकर जला दिए गए थे। गुल्लू का बेटा डूगर (जन्म १७०८) तथा डूगर का बेटा भाई मनी सिंघ माछीवाड़ा में शहीद कर दिया गया था। यह खानदान साहसीआणा कहलाता है, क्योंकि इनका बड़ा बुजुर्ग सहसा सुखीए का बड़ा पुत्र था अर्थात् भाई मनी सिंघ जी की भूआ का पुत्र। ये राठौर थे तथा भाई मनी सिंघ जी पुआर। राठौर वंश से सम्बंधित विवरण 'मोहरां वाली वही' (बही) में अंकित हैं, जो इस खानदान की शानदार शहीदियों के बारे में जानकारी देते हैं। आम प्रकाशित पुस्तकों में ये विवरण एवं नाम नहीं मिलते।

सिक्खी केशों-श्वासों संग निभाने वाले : भाई तारू सिंघ जी शहीद

-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'*

सिक्ख धर्म और सिक्ख रहित मर्यादा में केश, कंघा, कड़ा, कृपाण एवं कछहिरा— पांच ककारों का बहुत अधिक महत्त्व है। इन पांच ककारों को अति सम्मान दिया जाता है। इन्हें धारण करने वाले सिंघ, सिंघनियां और भुजंगी अपने गुरु की बख्शिश समझ इन्हें अपनी जान से भी ज्यादा प्रिय मानते हैं। इनकी आन, बान व शान के लिए वे अपनी जान तक कुर्बान कर देते हैं। महान् शहीद भाई तारू सिंघ जी ने अपने सिर के केश कत्ल करवाने की बजाय अपनी खोपड़ी उतरवाने को प्राथमिकता दी थी। शहादत की ऐसी अद्भुत एवं लासानी मिसाल कहीं और नहीं मिलती।

भाई तारू सिंघ जी का जन्म (पंजाब) माझा क्षेत्र के गांव पूहला में हुआ था। कृषि का पैतृक काम तथा नाम-सिमरन कर शांतिपूर्वक अपना जीवन व्यतीत कर रहे थे। घर में आने वाले प्रत्येक खालसा वीर की यथाशक्ति अनुसार सेवा करते। रात्रि-विश्राम के लिए जगह देते और दर्शन कर मन की प्रसन्नता प्राप्त करते। तत्कालीन मुगल सरकार द्वारा (यह अठारहवीं सदी की बात है) जब पूरी सिक्ख कौम ही 'कानून के विरुद्ध' घोषित कर दी गई थी और सरकारी तौर पर एलान कर दिया गया था कि किसी सिक्ख को जिंदा पकड़ कर या मुर्दा सिंघ का सिर लाने वाले को इनाम दिया जाएगा, तब उस मुश्किल समय में सिक्खों द्वारा रिहायशी क्षेत्रों में रहना काफी कठिन हो गया था। सरकार का यह भी आदेश था कि जो व्यक्ति सिक्खों को पनाह देगा या छकने के लिए भोजन-पानी देगा, उसे कड़ी से कड़ी सज़ा दी जाएगी। साधारण हमदर्द लोग भी मदद करने से डरने लगे थे, परंतु निडर, गुरु के सच्चे सिक्ख भाई तारू सिंघ जी न केवल अपने गांव में बसते रहे अपितु सरकार के विरुद्ध आवाज़ बुलंद करने वाले, तेग उठाने वाले खालसा की यथासंभव सेवा, मदद भी करते रहे। पूरा गांव उनको बहुत सम्मान देता था।

एक लालची क्षत्रिय, जिसे भगत् निरंजनिया कहा जाता था, ने लाहौर के सूबेदार ज़करिया खान के पास शिकायत कर दी कि उसके गांव में एक ऐसा आदमी रहता है, जिसके पास सभी सिक्ख आकर रहते हैं और हमारे पूरे इलाके में उन्होंने अशांति व तबाही मचा रखी है।

झूठे व कमीने भगत् निरंजनिये की शिकायत के विषय में जांच-पड़ताल करने-करवाने की बजाय ज़करिया खान ने फौरन हुक्म दे दिया कि भाई तारू सिंघ जी को गिरफ्तार कर उसके सामने पेश किया जाए।

शाही फौज गांव पूहला पहुंची। भाई तारू सिंघ जी को गिरफ्तार कर ज़करिया खान के समक्ष पेश

*बी-एक्स ९२५, मोहल्ला संतोखपुरा, होशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, फोन : ९८७२२-५४९९०

किया गया। ज़करिया खान ने पूछा, ''क्या तुम सिक्खों यानि बागियों को अपने पास ठहरने के लिए जगह देते हो?''

भाई तारू सिंघ जी ने दिलेराना अंदाज़ में जवाब दिया, ''मैं केवल जगह ही नहीं देता बल्कि अपनी आर्थिक सामर्थ्य के अनुसार पूरी आस्था के साथ उनकी सेवा भी करता हूं। खालसा की सेवा करनी मैं अपना धर्म और परम कर्त्तव्य समझता हूं। क्या तुम चाहते हो कि मैं अपना यह धर्म-कर्म छोड़ दूं?''

हां, मैं यही चाहता हूं। क्या तुम यह यकीन दिला सकते हो कि आज के बाद तुम किसी बागी की मदद नहीं करोगे?'' ज़करिया खान तमतमा कर बोला।

भाई तारू सिंघ जी ने कहा, ''अरे ज़करिया खान! तुम जिन्हें बागी कहते हो, वे सच्चे सिक्ख और धर्म, न्याय की रक्षा करने वाले सच्चे देश-भक्त हैं। मैं उनकी सेवा करता रहूंगा। मेरे पास अपना कुछ भी नहीं है। जो कुछ है, वह सब मेरे गुरु की बख्शिश है, कृपा है। मैं इसे खालसा की सेवा में लगाता रहूंगा। खालसा की सेवा छोड़ने का ख्याल तो मृत्यु के ख्याल से भी बुरा है।''

भाई साहिब का दिलेराना उत्तर सुनकर तथा कड़े तेवर देखकर ज़करिया खान ने काज़ियों को बुलवा लिया और उनकी राय से हुक्म दिया कि ''इस बागी सिक्ख के सिर के बाल (केश) काट दिए जाएं। यह अपनी सिक्खी पर बहुत गर्व करता है। इसे सिक्खी से पतित कर दिया जाए।''

भाई तारू सिंघ जी यह कदापि सहन नहीं कर सकते थे कि उनके गुरु की मुहर रूप केशों का अपमान किया जाए। उन्होंने अपने नेत्र मूंद लिए और उनकी सुरति अकाल पुरख की याद में जुड़ गई। उन्होंने अरदास की, ''हे सच्चे पातशाह! मुझे बल प्रदान करना ताकि मैं सिक्खी केशों-श्वासों संग निभा सकूँ।''

जब सरकारी मुलाज़िम उनके केश कत्ल करने के लिए निकट आए, तब भाई तारू सिंघ जी ने कहा कि वे अपने केश कत्ल नहीं होने देंगे। उन्होंने कहा कि ''मैं आपको केशों के कत्ल करने के अपमान से भी ज्यादा कुछ दूंगा। आप मेरे केशों सहित खोपरी ही उतार लो।''

इस तरह भाई तारू सिंघ जी ने अपने केशों का अपमान नहीं होने दिया, बल्कि अपनी खोपरी केशों सहित उतरवा दी।

शहीदों के खून का एक-एक कतरा नए शहीद पैदा करने का कारण बनता है। आज सिक्खी अगर ज़िंदा है तो ऐसी अनगिनत कुर्बानियों, शहादतों के कारण ही जिंदा है। सिक्खी की विरासत शहादतों की विरासत है।

लाहौर में शहीद भाई तारू सिंघ जी का अंतिम संस्कार किया गया। यह जगह रेलवे स्टेशन के अति निकट है और यहां 'शहीद गंज' साहिब बनाया गया है। धन्य हैं महान् शहीद भाई तारू सिंघ जी, जिन्होंने दृढ़ संकल्प, शूरवीरता, अदम्य साहस का परिचय देते हुए सिक्खी केशों-श्वासों संग निभाई। केश गुरु की मुहर हैं। हमारे सिक्ख भाइयों, बहनों, युवक-युवतियों को भाई तारू सिंघ जी की शहादत से प्रेरणा लेते हुए गुरु की मुहर केशों का अपमान नहीं करना चाहिए। इनकी उचित देखभाल, संभाल व रक्षा करनी चाहिए। सिक्खी स्वरूप की अपनी विलक्षण पहचान है। यह अनमोल है, अद्वितीय है, अकाल पुरख की कृपा है।

जिन्होंने सिक्खी केशों-श्वासों संग निभाई . . .

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ साहिल**

अपने अकीदे और विश्वास पर अडिग रहने का मूल्य अक्सर अपने प्राणों का बलिदान देकर चुकाना पड़ता है। मानव-इतिहास के हर शहीद की यही दास्तान रही है। अति विनम्र, महाबलिदानी भाई तारू सिंघ जी भी इसी तरह के शहीदों की श्रेणी में आते हैं।

आत्म-बलिदानी की पृष्ठभूमि : यह गौरव-गाथा तब की है जब नादिर शाह सन् १७३९ ई. में भारत पर आक्रमण कर उसे लूटने के बाद अभी वापस लौटा ही था। उन दिनों लाहौर का सूबेदार था—जकरिया खान। वैसे सन् १७१६ ई. में बाबा बंदा सिंघ बहादुर की शहादत के बाद सिक्खों पर और भी भयानक दमन-चक्र चला दिया गया था। फौज ही नहीं, आम आदमियों को भी खुली छूट थी कि जहां सिक्ख दिखे उसे मौत के घाट उतार दिया जाए। सिक्ख का सिर काट कर लाने वालों को इनाम दिया जाता था। ऐसे माहौल में सिक्खों को घर-गांव छोड़कर जंगल-जंगल भटकना पड़ा। सिक्ख छोटे-छोटे जत्थों में घोड़ों पर सवार होकर इधर-उधर छिपते रहते और मौका मिलते ही छापामार युद्ध कर दुश्मन को करारा झटका देकर गायब हो जाते।

सिक्खों ने अत्याचारी आक्रमणकारियों और शासकों से दुखी जनता की बार-बार मदद कर उनकी सहानुभूति पा रखी थी। नादिर शाह के हमले के समय भी सिक्खों ने छापामार युद्ध कर नादिर शाह की नाक में दम कर रखा था। उधर लंबे समय तक दमन-चक्र चलाकर भी सिक्खों का अंत न कर पाने के कारण लाहौर का सूबेदार जकरिया खान सिक्खों से बेहद भन्नाया रहता था।

जब सिक्खों का घर 'घोड़ों की पीठ' पर ही हुआ करता था तब भी कुछ अति विनम्र प्रवृत्ति के सिक्ख गांवों में रहकर अपनी आजीविका कमाया करते थे। सत्ताधारियों को लगता था कि ऐसे निरीह सिक्खों से कोई विशेष भय नहीं है, अतः उन्हें गांवों में रहकर खेती आदि करने की आज्ञा दे दी गई थी।

भाई तारू सिंघ जी ऐसे ही सरल स्वभाव सिक्खों में से एक थे।

भाई साहिब का जीवन : भाई तारू सिंघ जी का जन्म श्री अमृतसर साहिब के गांव पूहला में हुआ था। आपके बचपन में ही आपके सिर से पिता का साया उठ गया था। भाई साहिब अपनी मां की सेवा करते और खेतीबाड़ी से जीविका कमाते।

भाई साहिब अपने घर में ही लंगर चलाते थे। गुरु की कृपा सदका आपके लंगर से अनेक साधनहीन लोगों को भोजन प्राप्त होता। यह नित्य का कार्य-व्यवहार था।

छापामार सिक्खों के जत्थे भी कई-कई बार आकर भाई साहिब के लंगर में परशादा छकते।

**१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, फोन : ९४१७२-७६२७१*

सिक्खों की जनरक्षक छवि और भाई साहिब के सद्व्यवहार के कारण दूर-दूर तक के गांवों में लोग सब कुछ जानते हुए भी इस भेद को ज़ाहिर नहीं करते थे।

भाई साहिब की गिरफ्तारी : लेकिन राज़ आखिर कब तक छिपता? इस इलाके में जकरिया खान का एक अहलकार हरिभगत निरंजनिया रहा करता था। यह धूर्त गुरु-घर एवं सिक्खों का विरोधी था। एक दिन इसके कान में यह भनक पड़ ही गई। इसने तुरंत जकरिया खान के पास भाई तारू सिंघ जी की शिकायत कर दी।

सूबेदार जकरिया खान ने उसी वक्त भाई साहिब की गिरफ्तारी का हुक्म दे दिया। हरिभगत निरंजनिया तुरंत बीस सिपाहियों को साथ लेकर गया और भाई तारू सिंघ जी को गिरफ्तार कर लिया। यह घटना जुलाई, सन् १७४५ ई. की है।

भाई साहिब पर फतवा : भाई तारू सिंघ जी को गिरफ्तार कर लाहौर लाया गया और सूबेदार की कचहरी में ला खड़ा किया गया। भाई साहिब पर छापामार सिक्खों की मदद करने का आरोप लगाया गया। फतवा जारी किया गया कि यदि वे इसलाम धर्म स्वीकार कर लेते हैं तो उनके अपराध क्षमा कर दिए जाएंगे और उन्हें ऐशो-इशरत की जिंदगी बसर करने का बंदोबस्त करके दिया जाएगा। अगर वे इसलाम ग्रहण नहीं करते तो मरने के लिए तैयार हो जाएं।

भाई तारू सिंघ जी अपनी अकीदत पर कायम रहे, अपने विश्वास पर अडिग रहे। विनम्रता की मूरत भाई साहिब ने शहादत के मार्ग को चुना।

भाई साहिब को यातनाएं : अति विनम्र सिक्ख को उसके विश्वास से न डिगा पाने के कारण जकरिया खान गुस्से से जलभुन गया। उसका गुस्सा सातवें आसमान पर जा पहुंचा। उसने जल्लादों को हुक्म दिया कि भाई तारु सिंघ जी के केश खोपड़ी समेत खुरपी से खुरच-खुरच कर उतार दिए जाएं।

भाई साहिब की खोपड़ी खुरपी से खुरच-खुरच कर उतारी गई। भाई साहिब बिलकुल भी विचलित न हुए। अडिग रहकर बाणी का जाप करते रहे।

अंत में बुरी तरह से घायल हो चुके भाई तारू सिंघ जी को कैदखाने में भेज दिया गया।

भाई साहिब की शहादत और जकरिया खान का अंत : अकाल पुरख का न्याय देखें . . . जकरिया खान उसी दिन बीमार पड़ गया। कहते हैं कि भाई तारू सिंघ जी का जूता जब तक उसके सिर पर मारते, तब तक उसको चैन मिलता और जब जूता मारना बंद कर दिया जाता तब जकरिया खान का मूत्र रुक जाता है और वह पीड़ा से चिल्लाने लगता।

नौ दिनों तक यही चलता रहा। भाई साहिब का जूता सिर में मारो तो आराम वरना भयानक दर्द . . .। आखिर नौवें दिन पिटाई खाते-खाते और कष्ट सहते-सहते जकरिया खान मर गया।

उधर भाई तारू सिंघ जी भी घायलावस्था में निरंतर नौ दिनों से गुरबाणी का जाप कर रहे थे। जब उन्हें दुष्ट जकरिया खान के मरने की खबर मिली तो उन्होंने अकाल पुरख का 'शुक्र' किया और शहीद हो गए। लाहौर के दिल्ली दरवाजे के पास भाई तारू सिंघ जी शहीद का शहीदी-स्थल आज भी सुशोभित है।

शहीदी साका बजबज घाट के नायक : बाबा गुरदित्त सिंघ

*-सिमरजीत सिंघ**

तहसील व ज़िला तरनतारन के ब्लाक चोहला साहिब का गांव सरहाली है। यह गांव तरनतारन-हरीके सड़क पर स्थित है। रेलवे स्टेशन पट्टी इस गांव से ७ किलोमीटर दूर है। इस गांव में संधू भाईचारे के लोगों का निवास है। संधुओं के बारे में कहा जाता है कि इनका मुख्य ठिकाना श्री अमृतसर तथा लाहौर ज़िला था। यहां से उठकर सतलुज से ऊपरी तट की ओर अम्बाला के पहाड़ों के नीचे, पश्चिम में गुजरांवाला तथा पूरब में सियालकोट तक फैल गए। संधू भाईचारे के लोग अपनी पृष्ठभूमि सूर्यवंशी राजा रघु से मानते हैं। कहा जाता है कि कादर ने विस्माद में आकर एक बहुत ही सुंदर कन्या की उत्पत्ति की। जब उसकी उम्र ब्याह योग्य हुई तो देवताओं व राजाओं ने उसके साथ विवाह करने की कोशिश की। राजा रघु विवाह करवाने में सफल हो गया। इस राजा को इतना बहादुर माना जाता था जितना कि सूरज, इसलिए इसको रघु कहा जाता था। इस घटना का ज़िक्र करते हुए श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी 'बचित्र नाटक' में वर्णन करते हैं :

साध करम जो पुरख कमावै ॥
नाम देवता जगत कहावै ॥
कुक्रित करम जो जग मैं करहीं ॥
नाम असुर तिन को सभ धरहीं ॥. . .
तिन ते होत बहुत निप आए ॥
दच्छ प्रजापति जिन उप जाए ॥
दस सहंस्र तिहि ग्रिह भई कंनिआ ॥
जिह समान कह लगै न अंनिआ ॥
काल क्रिआ ऐसी तह भई ॥
तो सभ बिआहि नरेसन दई ॥

रघु की औलाद रघुवंशी कहलाती है। इस रघु ने समूचे भारत पर राज्य किया था। संधुओं का विचार है कि उनके पूर्वज महमूद गज़नवी के साथ कैद होकर या किसी अन्य कारणवश गज़नी चले गए थे। तेरहवीं सदी में वे फिर वापिस आ गए या फिरोज़ शाह के समय अफगानिस्तान से भारत की तरफ आ गए तथा माझा क्षेत्र में लाहौर के पास आबाद हो गए। माझा में सरहाली, वलटोहा, भड़ाणा, मनांवां आदि संधुओं के प्रसिद्ध गांव हैं।

महाराजा रणजीत सिंघ की फौज़ में संधू भाईचारे का बहादुर जरनैल स. रतन सिंघ सरहाली गांव का निवासी था। महाराजा रणजीत सिंघ की मृत्यु के बाद पंजाब पर अंग्रेजों का राज्य हो गया। पंजाब पर अंग्रेजों का राज्य होने के साथ ही सारा भारत अंग्रेजों के अधीन हो गया। अंग्रेजों द्वारा स. रतन सिंघ को अपने पक्ष में करने के लिए जागीर की पेशकश की गई। स. रतन सिंघ ने अंग्रेजों की पेशकश को ठुकराकर खुद को सिक्ख

**मुख्य संपादक व उप सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर। फोन : ९८१४८-९८२२३*

राज्य का सच्चा सिपाही साबित किया था। स. रतन सिंघ का पुत्र स. हुकम सिंघ सरहाली में ही कृषि-कार्य कर मेहनत की पावन कमाई करता रहा। स. हुकम सिंघ के घर १८६१ ई. में बाबा गुरदित्त सिंघ का जन्म हुआ। ६ वर्ष की उम्र में आपने एक सन्यासी से संथ्या लेकर 'पंज ग्रंथी' से गुरबाणी का पाठ करना सीख लिया। एक बार आप रिश्तेदारी में विवाह-समारोह में गए, जहां आपने एक बहुत ही दुराग्राही (जिद्दी) घोड़ी को काबू कर सवारी की। यह देखकर सभी हैरान रह गए। एक आदमी ने आपको फौज में भर्ती होने की सलाह दी। आप फौज में भर्ती होने के लिए चले गए किंतु अंग्रेज अफसर ने आयु छोटी होने के कारण आपको भर्ती करने से इनकार कर दिया।

अंग्रेजों ने भारत को लूटना शुरू कर दिया। यहां का कच्चा माल कम दाम पर इंग्लैंड ले जाया जाता और तैयार माल फिर यहां की मंडियों में लाकर महंगे भाव बेचा जाता। लोगों की ज़रूरत की हर वस्तु विदेश से आने लगी जिसके लिए देशवासियों को भारी कीमत चुकानी पड़ती थी। जनसाधारण पर तरह-तरह के टैक्स लगाए जाने लगे। भारतीय लोगों से नफ़रत कर उनसे गुलामों की तरह काम लिया जाता था। अगर कोई अंग्रेजों की गलत नीतियों के विरुद्ध आवाज़ उठाने की कोशिश करता तो उसको घोर यातनायें दी जाती। कृषि-कार्य में पड़ रहे रोज़ के घाटे के कारण किसान कृषि-कार्य छोड़कर दूसरे देशों में जाकर मेहनत-मज़दूरी करने लगे। सिक्खों की परवाज़ कनाडा की तरफ हुई। कहा जाता है कि कनाडा के शहर कैलगरी में सबसे पहले बसने वाला सिक्ख स. हरनाम सिंघ हरी था। इसके नाम पर कनाडा में एक पार्क भी बना हुआ है। वैनकुवर शहर में बसने वाला पहला सिक्ख स. केसर सिंघ फौजी माना जाता है, जो १८९७ ई. में वैनकुवर पहुंचा था। स. हुकम सिंघ ने भी सरहाली से मलाया जाकर ठेकेदारी करनी शुरू कर दी। स. गुरदित्त सिंघ १२ वर्ष की बाल्यावस्था में अपने पिता के पास मलाया चले गए। १८८३ ई. में आपकी शादी हो गयी। आपके घर औलाद न होने के कारण आपने दूसरी शादी कर ली, जिससे एक लड़के ने जन्म लिया। यह बच्चा तीन महीने का ही मर गया। समयावधि के बाद आप जी की पत्नी दूसरे लड़के को जन्म देकर परलोक सिधार गई। बच्चे का पालन-पोषण बाबा गुरदित्त सिंघ को ही करना पड़ा।

१९०० ई. तक बहुत सारे पंजाबी मलेशिया, थाईलैंड, हांगकांग, शिंघाई, जावा, कनाडा, मनीला, पूर्वी अमेरिका, आस्ट्रेलिया व इंग्लैंड में पहुंच कर अपना व्यवसाय शुरू कर चुके थे। कनाडा की १९८० ई. में हुई जनगणना के अनुसार वहां की आबादी में लगभग २००० भारतीय थे, जिनमें से ज्यादा सिक्ख थे। इन देशों में ही अंग्रेजों ने अपनी बस्तियां कायम की हुई थीं। इन सभी देशों पर अंग्रेजों का राज्य था इसलिए एक देश से दूसरे देश में जाने के लिए कोई मुश्किल नहीं आती थी और न ही किसी प्रकार के वीजे की ज़रूरत पड़ती थी। कुछ समय बाद हालात बदलने शुरू हो गए। सिक्खों/पंजाबियों का मेहनती स्वभाव होने के कारण ये अंग्रेजों से ज्यादा काम

करते और ज्यादा पैसा इकट्ठा करते। इनके अलग सभ्याचार व बोली, शैली के कारण भी अंग्रेज कर्मचारी इनसे ईर्ष्या करने लग गए। वे समझते थे कि सिक्खों के मेहनती स्वभाव तथा वफ़ादार होने के कारण उनकी रोज़ी-रोटी छिन सकती है। जब ऐसा सलूक चीनियों व जापानियों के साथ होता तो सरकार उनके हक में आ जाती परंतु सिक्खों के साथ ऐसा न किया जाता। सिक्खों को वहां से निकालने के लिए तरह-तरह की अफवाहें भी फैलाई जाती। अंग्रेज कर्मचारियों के मन में यह एहसास पैदा किया जाने लगा कि पंजाबी लोग उनका कारोबार छीन लेंगे और वे बेरोज़गार हो जाएंगे। अंग्रेजों की क्रूरता का दौर बढ़ता गया तथा १९०७ ई. में भारतीयों से वोट देने का अधिकार भी छीन लिया। १२ अगस्त, १९०७ ई. को भारतीयों के कनाडा में प्रवेश करने पर रोक लगाने के लिए 'एशीएटक एक्सक्यून लीग' नामक जत्थेबंदी कायम कर दी गयी। कुछ समय बाद बड़ी संख्या में अंग्रेज़ इसके सदस्य बन गए। इन्होंने अंग्रेज सरकार की शह पर पंजाबियों/सिक्खों से भेदभाव तथा नफ़रत करनी शुरू की। पंजाबी कर्मचारियों पर तशद्दुद का दौर शुरू हो गया। अंग्रेजों द्वारा पंजाबियों को निकाल देने की मुहिम शुरू हो गयी तथा इसके लिए प्रयत्न पूरे जोरों पर होने लगे। ८ जनवरी, १९०८ ई. को कनाडा सरकार ने कानून पास कर दिया कि कनाडा की धरती पर मजदूरी करने वही शख्स आ सकता है जो अपने देश से अखंड जहाज़ी सफर द्वारा यहां पहुंचेगा। इस कानून के बनने से भारतीयों, खासकर सिक्खों पर सीधा असर पड़ता था। कनाडा में रह रहे सिक्खों को हांडूरस भेजने का प्रयत्न भी किया गया जो सफल न हो सका। इस साज़िश के प्रति सिक्खों को जागरूक करने के लिए मसतूआणा के भाई (संत) तेजा सिंघ ने संघर्ष किया।

१९१० ई. तक १० हज़ार के लगभग भारतीय कनाडा पहुंच चुके थे। वे वहां मेहनत कर अपना गुज़ारा करते और भारत रहते साक-संबंधियों की भी आर्थिक मदद करते थे। सिक्खों को कनाडा में से निकालने के लिए आवास सम्बंधी एक नया कानून ९ मई, १९१० ई. को अस्तित्व में लाया गया। इसके अनुसार— ''गवर्नर जनरल कनाडा द्वारा ९ मई, १९१० पी. सी. एम.-९२० के अनुसार जारी हुक्म के तहत, इस दिन से कनाडा में आने वालों के लिए यह ज़रूरी होगा कि वे कनाडा पहुंचने के लिए अपने देश या जिस देश के वे नागरिक हों, से कनाडा के लिए सीधा लगातार सफर करें और इसके लिए उस देश में से या पेशगी रकम से कनाडा से टिकट खरीदी गई हो।''

९ मई, १९१० ई. के ही पी. सी. एम.- ९२६ के अनुसार— ''सरकारी हुक्म के तहत किसी भी एशियाई मूल के किसी भी ऐसे व्यक्ति को कनाडा में दाखिल होने की इजाजत नहीं होगी, जिसके पास सही रूप में २०० डालर न हों। ऐसे एशियाई देश, जिनके बारे में विशेष संवैधानिक नियम हों या कनाडा की सरकार के साथ विशेष संधि या समझौता हो, के नागरिक के लिए इस कानून की छूट होगी।''

इस कानून के बनने से विदेशों में रह रहे पंजाबियों का अपने परिवारों से मेल-मिलाप खत्म होने लगा। ये परिवार अपने रिश्तेदारों के बिछड़ने के भय से बेहाल हो गए। सिक्खों के मन में इस धक्केशाही के विरुद्ध गुस्सा भर आया। पंजाबियों ने इसके विरुद्ध आवाज़ उठाने की योजना बनायी। सिक्खों द्वारा इस कार्य की पूर्ति हेतु खालसा दीवान सोसायटी कायम की गई। अंग्रेजों की धक्केशाही के विरुद्ध उठी इस लहर को 'गदर लहर' नाम से सम्बोधित किया जाने लगा। सारी दुनिया में बसते सिक्खों ने इस लहर को प्रफुल्लित करने के लिए भरपूर योगदान डाला। २४ दिसंबर, १९१३ ई. को ब्रिटिश कोलंबिया की उच्च अदालत ने ३५ नये पहुंचे सिक्खों को वहां रहने की आज्ञा दे दी। इसको सिक्खों ने अपनी प्रथम विजय के रूप में लिया। फिरोज़पुर निवासी भाई तखत सिंघ ने विदेशों में गए हक-सच की मेहनत कर रोज़ी-रोटी कमाने वाले सिक्खों को अंग्रेजों की ज्यादतियों के विरुद्ध लामबंद करना शुरू कर दिया।

सन् १९१३ ई. में बाबा गुरदित्त सिंघ हांगकांग आकर ठेकेदारी करने लग गए। आपने पहले ठेकेदारी का कारोबार करते हुए पंजाबियों व भारतीयों को मलाया तथा पूरब के दूसरे स्थानों पर मंदहाली में मेहनत-मजदूरी करते हुए देखा था। इनको अपने सिक्ख होने पर बहुत गर्व था। अपने देशवासियों को गुलामों की तरह जीवन-यापन करते देख इनके मन पर गहरी चोट लगी। इनके मन में अपने हमवतनियों के लिए कुछ करने का विचार चलता रहता।

जनवरी, १९१४ ई. में हांगकांग के गुरुद्वारा साहिब में दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का प्रकाश दिवस मनाया गया। सारे ही दीवान में एक भी सिक्ख फौजी हाज़िर नहीं था। पड़ताल करने पर बात सामने आई कि सरकार द्वारा सिक्ख फौजियों को गुरुद्वारा साहिब जाने से रोक दिया गया है। इस हृदयविदारक घटना के बारे में बाबा गुरदित्त सिंघ ने जोशीला भाषण दिया तथा इस बात का निश्चय किया कि ''यह गुलामी नामक रस्सी भारतीयों के गले में से जब तक नहीं उतरती तब तक ऐसी पाबंदियों का अंत नहीं होगा, इसलिए हम सबको जत्थेबंद होने की ज़रूरत है।''

सन् १९१४ ई. में प्रथम विश्व युद्ध शुरू हो गया। इस समय अंग्रेज सरकार ने पंजाब के जवानों को भर्ती कर विदेशों में अपने हक के लिए लड़ने भेज दिया। यहां बहुत-से जवान गुमनाम शहीदियां पा गए। बहुत-से विदेशों में ही अपने रिश्तेदारों से दूर बस गए। बहुत-से पंजाबियों ने अंग्रेजों के घर में नौकरी की। इसी तरह बहुत-से पंजाबियों ने कनाडा, अमेरिका, सिंगापुर, हांगकांग जैसे देशों में छोटे-छोटे काम-धंधे शुरू कर लिए। सिक्खों की बढ़त देखकर अंग्रेजों ने एक और काला कानून जारी कर दिया। ७ जनवरी, १९१४ ई. के आर. सी. नंबर २६ के अनुसार— ''सरकार द्वारा जारी हुक्म के तहत इस तारीख से किसी भी ऐसे प्रवासी या एशियाई मूल के व्यक्ति को कनाडा में उतरने की आज्ञा नहीं होगी जिसके

पास अपने २०० डालर न होंगे। यह नियम उस एशियाई देश के नागरिक या निवासी के लिए लागू नहीं होगा जिसके साथ कनाडा सरकार द्वारा विशेष संधि अथवा समझौता किया गया हो तथा जिसके साथ कनाडा को यह नियम लागू करने की मनाही हो।''

उन दिनों भारतीयों के पास २०० डालर होना बहुत बड़ी बात थी। बहुत कम लोग इस शर्त को पूरा कर सकते थे। इस हुक्म के अनुसार एक तरह से भारतीयों के कनाडा में प्रवेश करने पर पूर्ण रूप से पाबंदी लग गई थी। बाबा गुरदित्त सिंघ के मन पर इस धक्केशाही का गहरा असर हुआ। उन्होंने हांगकांग में रहते कुछ भारतीयों से मिलकर सलाह की कि वे समुद्री जहाज़ किराए पर लेकर सिक्ख प्रवासियों को कनाडा लेकर जाएंगे, ताकि वे वहां जाकर अच्छा जीवन गुज़ार सकें। कनाडा के निवासी भारतीयों ने इस कार्य के लिए उनको पूर्ण सहयोग देने का भरोसा दिया। अंततः यह फैसला हो गया कि वे एक जहाज़ द्वारा यात्रियों को हांगकांग से वैनकुवर लेकर जाएंगे। यह जहाज़ रास्ते में शिंघाई, मनीला तथा योकोहामा बंदरगाह पर रुकेगा। बाबा गुरदित्त सिंघ ने इस कार्य के लिए 'श्री गुरु नानक स्टीमर कंपनी' कायम की। २१ फरवरी, १९१४ ई. को सूचना देने के लिए इश्तिहार प्रकाशित किए गए, जिनके अनुसार— ''कनाडा सरकार द्वारा ९ मई, १९१० ई. को भारतीय प्रवासियों के बारे में लागू किए गए कानून से बहुत सारे भारतीयों को बहुत-सी मुश्किलों का सामना करना पड़ा है। अब हमने कनाडा के कानून की शर्तें पूरी करने का प्रबंध किया है जिसके तहत सवारियां सीधे भारत से ही बुक की जाएंगी तथा कनाडा उतरने पर यह दिखाया जाएगा कि हर प्रवासी के पास उसके २०० डालर हैं। हमें अभी ओटावा से टेलीग्राम मिली है कि भावी प्रवासी सीधे भारत से बुकिंग करें तथा कनाडा में उतरते समय अपने पास २०० डालर दिखाएं। हमने इन दोनों बातों का ही प्रबंध कर लिया है।''

''१. सीधा जाने के लिए हमने जहाज़ किराए पर ले लिया है और मि. ए. डब्ल्यू किंग से कहा है कि वह इसका प्रबंध करे। यात्री सीधा वैनकुवर ले जाए जाएंगे और वहीं उतारे जाएंगे। यात्रा के लिए टिकट का मूल्य ३५० रुपए होगा। नैतिक संकोच तथा धार्मिक यात्री के लिए यह टिकट ५० रुपए होगी। जो यात्री खाने का प्रबंध खुद करेंगे उनसे खाने के पैसे नहीं लिए जाएंगे। जहाज़ के रवाना होने की सूचना पंजाबी तथा अन्य अख़बारों में दे दी जाएगी तथा गांव के मुखिया लोगों को इससे अवगत करवाया जाएगा। कंपनी का मुख्य ऑफिस कलकत्ता (कोलकाता) में होगा तथा इसकी पूरे विश्व में शाखाएं होंगी। इस बार जहाज़ की रवानगी के बारे में सूचना अखबार में नहीं दी जाएगी और कुछ गुरुद्वारों को टेलीग्राम द्वारा बताया जाएगा। अगर किसी ने इसके बारे में निम्न हस्ताक्षरकर्ता से अधिक जानकारी लेनी हो तो वो इस ठिकाने पर पत्राचार करे :—

बाबा गुरदित्त सिंघ डायरेक्टर,

श्री गुरु नानक स्टीमर कंपनी, गुरुद्वारा हावड़ा, कलकत्ता।

कलकत्ता, २१ फरवरी, १९१४''

२४ मार्च, १९१४ ई. को शीनी किशन गो. सी. काईशर कंपनी से हांगकांग में 'कामागाटामारू' नामक जापानी समुद्री जहाज़ ६ महीने के लिए ११ हज़ार डालर प्रति महीना किराए पर ले लिया। बाबा गुरदित्त सिंघ ने पहले कलकत्ता से जहाज़ किराए पर लेकर सीधा कनाडा जाने की योजना बनायी थी। कुछ कारणों से उनकी योजना सफल न हो सकी तो उन्होंने हांगकांग से चलने का प्रोग्राम बनाया। कामागाटामारू जहाज़ कनाडा जाने के लिए तैयार हुआ। अंग्रेज सरकार द्वारा अनेक प्रकार की रुकावटें डाली गयीं। पहले पांच सौ यात्रियों ने जाना था, परंतु हांगकांग की पुलिस ने बाबा गुरदित्त सिंघ को गिरफ्तार कर बिना किसी दोष के नज़रबंद कर दिया। विरोधी तत्वों ने पूरे जोर-शोर से बाबा जी के विरुद्ध प्रचार करना शुरू कर दिया। कामागाटामारू के यात्रियों को डराया-धमकाया जाने लगा। बाबा गुरदित्त सिंघ के वकील द्वारा पैरवी करने पर उनको रिहा कर दिया गया। बाबा गुरदित्त सिंघ द्वारा सरकार के विरुद्ध अदालती केस दायर करने की धमकी देने के कारण उन पर लगाई गई सभी पाबंदियां खत्म कर दी गईं। साथ ही अंग्रेज सरकार को कनाडा में इस जहाज़ के आने की सूचना देकर सख्त कार्यवाही करने की सलाह भेज दी गई।

४ अप्रैल, १९१४ ई. को ५: ५५ पर १६५ यात्रियों को लेकर कामागाटामारू जहाज़ हांगकांग से वैनकुवर को रवाना हो गया। बाबा गुरदित्त सिंघ का छोटी उम्र का पुत्र भी साथ था। ८ अप्रैल, १९१४ ई. को शाम ५:३० बजे जहाज शिंघाई पहुंच गया। यहां से इसमें १११ यात्री और सवार हो गए। १५ अप्रैल, १९१४ ई. को शाम ३:५३ पर शिंघाई से माजी के लिए रवाना हो गया तथा १८ अप्रैल को सुबह ८:०० बजे माजी पहुंच गया। माजी में पहुंच कर जहाज़ का कप्तान काकीनो बरखास्त हो गया तथा उसकी जगह पर कप्तान यामन ने काम संभाल लिया। मिआजी को जहाज़ का मुख्य अधिकारी बनाया गया। माजी से जहाज़ में ८६ यात्री और सवार हो गए। २९ अप्रैल, १९१४ ई. को सुबह ५:०८ बजे जहाज़ ने माजी से योहकामा के लिए प्रस्थान किया। २ मई, १९१४ ई. को यह ८:२० पर चीन की बंदरगाह योहकामा पहुंच गया। योहकामा से इसमें १४ यात्री और सवार हो गए। इस तरह जहाज में ३७६ मुसाफिर सवार थे, जिनमें से केवल ३० गैर-सिक्ख थे।

३ मई, १९१४ ई. को जहाज सुबह ८:०५ पर योहकामा से वैनकुवर के लिए रवाना हो गया। २१ मई, १९१४ ई. को यह शाम ७:४२ बजे विलियम हेंड कुराटीन स्टेशन पर रुका। २२ मई, १९१४ ई. को सुबह यह जहाज़ वैनकुवर पहुंच गया। वैनकुवर शहर से भाई बलवंत सिंघ ग्रंथी अपने साथियों सहित स्वागत के लिए पहुंचे हुए थे। यहां जहाज़ के कप्तान ने बाबा जी से कहा कि उनसे जहाज़ के प्रस्थान सम्बंधी रवानगी के पत्र खो गए हैं। बाबा जी ने उसके सामान में से ही पत्र ढूंढ दिए। पत्र दिखाने पर भी जहाज़ को किनारे न लगने दिया गया। २३ मई, १९१४ ई. को सुबह २: ५० बजे वैनकुवर में जहाज़ का लंगर डाला गया।

मुसाफिरों में से केवल उनको ही उतरने दिया गया जो कनाडा की नागरिकता को सिद्ध कर सके। अन्य सभी मुसाफिर सख़्त पहरे तले रखे गए। मुसाफिरों द्वारा इमीग्रेशन के उच्चाधिकारी मैल्कम रीड के पास रोष प्रकट करने पर भी कोई असर नहीं हुआ। बाबा गुरदित्त सिंघ द्वारा यह दलील देने पर कि जहाज़ में कोयला लदा है, बतौर व्यापारी इसको उतार कर बेचने का उनको कानूनी अधिकार है, इन बातों की किसी अधिकारी ने कोई परवाह न की। वैनकुवर में बसते सिक्खों के पास भी खबरें पहुंच गई थीं। उन्होंने इकट्ठा होकर एक कश्ती ऐलबाली बंदरगाह पर ले जाकर मुसाफिरों को उतारने की कोशिश की परंतु कामयाब न हो सके। यूनाइटेड लीग तथा खालसा सोसायटी द्वारा सामूहिक रूप से इस धक्केशाही के विरुद्ध केस लड़ने के लिए एक अंग्रेज वकील मि. बर्ड की सेवाएं भी हासिल की गईं। वकील बर्ड को भी इमीग्रेशन अधिकारियों ने बाबा गुरदित्त सिंघ से मिलने की आज्ञा न दी।

१ जून, १९१४ ई. को किराए पर जहाज़ देने वाले ने धमकी दे दी कि अगर आवास अधिकारियों ने जहाज़ को पानी में ही रखा तो उसमें सवार भारतीय गड़बड़ कर सकते हैं।

२ जून को बाबा गुरदित्त सिंघ का यूरोपियन वकील बर्ड कश्ती में सवार होकर जहाज़ के नज़दीक आ गया, किंतु उसको आवास अधिकारियों ने मिलने न दिया। इस धक्केशाही के विरुद्ध उसने देश के प्रधानमंत्री को रोष-पत्र लिखा तो उसको बाबा गुरदित्त सिंघ से अलग-अलग कश्ती में सुरक्षित पहरे तले मिलने की आज्ञा दे दी।

४ जून, १९१४ ई. को आवास अधिकारियों ने कश्ती में ही एक घंटे के लिए वकील को मिलने दिया। इस मुलाकात का कोई खास परिणाम न निकला। इमीग्रेशन अधिकारी इस मुलाकात से खफा थे। इमीग्रेशन अधिकारी मि. मैल्काम्रीड ने वकील को समुद्र में फेंक देने की धमकी भी दी। यह खबर चारों ओर फैल गई।

५ जून, १९१४ ई. को जहाज़ में राशन खत्म हो रहा था तो आवास अधिकारियों ने एक कश्ती में कुछ राशन भेजा, परंतु बाबा गुरदित्त सिंघ ने राशन का भुगतान करने से इनकार कर दिया, जिस कारण वे सारा सामान फिर वापस ले गए।

१० जून, १९१४ ई. को बाबा गुरदित्त सिंघ द्वारा जहाज़ के एजेंट साटो को वैनकुवर बंदरगाह से चिट्ठी लिखी गई— ''प्यारे मि. साटो! मैं खैरियत से हूं और आपकी तंदरुस्ती की कामना करता हूं। सफर के बारे में मेरा बयान है कि मैं २३ मई, १९१४ ई. को वैनकुवर पहुंचा था और पहले दिन से मुझे और मेरे साथी यात्रियों को बंदरगाह पर खड़े जहाज़ में कैद करके रखा गया है। प्रवासियों के बारे में कानून, जो कि मेरे लिए बच्चों वाला खेल है, जिसके अदालत में मैं टुकड़े-टुकड़े कर सकता हूं, अगर इसलिए मुझे साहिल पर जाने दिया जाए। मुझे जहाज़ में दमनकारी ढंग से नज़रबंद करके रखा गया है और अनेक कठिनाइयां हैं। अब तक मेरे कानूनी सलाहकार एवं मेरे दोस्तों को मुझसे मिलने नहीं दिया गया

और न ही बात करने दी गई। इस तरह न तो मैं अपना माल उतार सका हूं तथा न ही और माल लाद सका हूं। मेरे एवं दूसरे यात्रियों पर इतनी सख़्त नज़र रखी जा रही है कि अख़बारें भी जहाज़ में नहीं आने दी जाती। हमारी रिपोर्ट पहले आवास अधिकारियों को दी जाती है ताकि जो वो चाहें वही आगे भेजें। चाहे मैंने आवास अधिकारी को नोटिस दिया कि सवारियों को छोड़कर वे मुझे और जहाज़ को नहीं रोक सकते परंतु उन्होंने इसकी परवाह नहीं की।''

''आपका एजेंट मि. सी. गार्डन जॉनसन बिलकुल मेरे विरुद्ध चल रहा है। मुझे नहीं मालूम क्यों ? हमारे यहां पहुंचने से पहले उसने अखबारों में हमारे विरुद्ध कई लेख लिखे जो २३ मई, १९१४ ई. को विक्टोरिया बंदरगाह में प्रकाशित हुए। उसका हुक्म मानकर जहाज़ के कप्तान यानामातो ने हमारे विरुद्ध बहुत कुछ किया। उसका क्या कारण है, मुझे नहीं मालूम। हम पर निगरानी रख रहे पहरेदार से मुख्याधिकारी मियाजी ने यह जानने की बहुत कोशिश की कि कामागाटामारू पर भारतीयों ने खासा व्यापार किया है तथा एक दिन में एक लाख डालर एवं सोना इकट्ठा किया है। वे यह रकम तट पर पहुंचने के पश्चात् मेरे हवाले करना चाहते थे। उन्होंने रकम देने के लिए मेरे हस्ताक्षर करवाने के लिए वकील को बुलाया था परंतु कप्तान ने उसको जहाज़ पर नहीं आने दिया। इसके बारे में अख़बारों की कटिंग्स इस पत्र के साथ संलग्न हैं।''

''आज सुबह १०:०० बजे कप्तान ने मुझे एक पत्र दिया जिसमें कहा गया था कि मैं किरायानामा, एक रहीम सिंघ नामक आदमी, जिसको मैं जानता नहीं, के नाम पर तबदील कर दूं, जिसके बाद वह किराया देगा। चाहे मुझे एक लाख डालर व सोने का नुकसान हुआ फिर भी मैंने किराए की रकम बिना किसी ढील के देने के लिए हां कर दी। मैंने अपने नुकसान के बारे में ज़ालिम सरकार को तारें दी, परंतु उसने कोई कार्यवाही नहीं की। यहां मैं २२ तारों की नकल भेज रहा हूं जो कि मैंने दी हैं। मैं एवं मेरी सवारियां ६ दिनों तक भूखी रहीं, क्योंकि आवास अधिकारियों ने हम में से किसी को भी कहीं जाकर खाने-पीने की वस्तुएं लाने की आज्ञा नहीं दी। इसके बारे में आवास विभाग के विरुद्ध दोष बिलकुल स्पष्ट हैं।''

''उन्होंने मेरी नज़रबंदी तथा यातनाओं के बारे में मुझे कोई कारण नहीं बताया। उनका मंतव्य यह है कि मैं अगर तट पर गया तो वहीं रकम जमा करा दूंगा, नहीं तो कप्तान जहाज़ लेकर चला जाएगा। मैंने उनको पैसों की खातिर जहाज़ वापिस नहीं मोड़ने दिया भले ही मेरा बहुत ज्यादा नुकसान हुआ। मुझे नहीं मालूम कि और कितने दिन जहाज़ में कैदी बनकर रहना पड़ेगा, परंतु मैं फैसला होने तक वापिस नहीं लौटूंगा।''

''अगर मैं बच गया तो अन्य बातें आपसे मिलकर करूंगा। कृप्या मेरी चिट्ठी अख़बार में प्रकाशित करा देना, क्योंकि मैं दुनिया की ताकतों को कनाडा सरकार द्वारा मुझे मेरे व्यापार में पहुंचाए नुकसान से अवगत कराना चाहता हूं।

कोई भी देश ऐसा नहीं करता। अगर मेरा उपरोक्त बयान गलत है तो कनाडा सरकार मुझ पर मुकद्दमा चला सकती है।''

''आपसे मेलजोल की आशा करता हुआ
गुरदित्त सिंघ,
किराएदार, एस. एस. कामागाटामारू,
वैनकुवर वी. सी.।''

२३ जून, १९१४ ई. को बाबा गुरदित्त सिंघ ने अपने वकील के साथ फिर एक बार बातचीत की। वैनकुवर में बसते सिक्खों को पता चला कि जापानी जहाज़ की अगली किश्त का भुगतान करना बाकी है तो उन्होंने सिक्ख संगत से फौरन ११ हज़ार डालर इकट्ठा कर भुगतान कर दिया। कनाडियन सरकार ने सिक्खों की गतीविधियों का पता लगाने के लिए जासूस विलियम हॉपकिन्सन की सेवाएं ली। विलियम हॉपकिन्सन कोलकाता निवासी गोरे बाप तथा भारतीय मां का पुत्र था। इसको पंजाबी बोलने तथा लिखने की मुहारत हासिल थी। इसने जहाज़ के अंदर तालमेल पैदा कर डॉ. रघुनाथ को लालच देकर अपना एजेंट कायम कर लिया। इसी तरह इसने अपनी घुसपैठ कर ज़िला होशियारपुर के गांव सिआण से आकर कनाडा में बसे स. बेला सिंघ तथा कई अन्य लोगों को अपना साथी बना लिया। इसी दिन जहाज़ सेक्रेटरी स. उमराउ सिंघ द्वारा वैनकुवर के बी. सी. को टेलीग्राम भेजी गई जिसकी एक नकल खालसा अख़बार लायलपुर को प्रकाशित करने हेतु भेजी गई। इसके अनुसार, ''कामागाटामारू के भारतीय यात्रियों को नाजायज़ रूप से जहाज़ में कैद कर रखा गया है। खाने-पीने का सामान एवं पानी लेने और कानूनी सहालकार व दोस्तों को मिलने से रोका गया। ऐसे अनुचित व्यवहार तथा गैरकानूनी व्यवहार के विरुद्ध बड़े पैमाने पर रोषमयी सभा करेंगे। हिन्दोस्तानी इसको कभी नहीं भूलेंगे और न ही माफ करेंगे। इसको व्यापक रूप से प्रसारित करें।''

२५ जून को वैनकुवर में यात्रियों द्वारा हेबियस कार्प्स रिट दायर की गई। इसके बारे में १९ जुलाई के अख़बार माडर्न रिव्यू में खबर प्रकाशित हुई जिसके अनुसार — ''कामागाटामारू जहाज़ के यात्रियों द्वारा हेबियस कार्प्स रिट दायर की गई थी, परंतु उस अपील की सुनवाई विक्टोरिया में होगी। उस दिन फैसला चाहे कुछ भी हो, हारने वाली पार्टी को कनाडा की सुप्रीम कोर्ट में अपील करने का अधिकार होगा तथा प्रीवी कौंसिल के पास भी की जा सकेगी। भारतीय यह महसूस करते हैं कि उनको नाजायज़ तौर पर जहाज़ में कैद कर रखा गया है तथा बरतानवी नागरिक होने के कारण उनको हेबियस कार्प्स रिट दायर करने का अधिकार है, ताकि वे उनकी नाजायज़ नज़रबंदी का मामला अदालत या जज के समक्ष रख सकें।''

५ जुलाई, १९१४ ई. को पांच यात्रियों ने कुछ भारतीयों के साथ, जो कनाडा में रह रहे थे, आवास अधिकारियों की कश्ती में मुलाकात की। जहाज़ में सवार बाकी यात्रियों ने इन पांचों को जहाज़ में लेने से इनकार कर दिया। इसी कारण इन पांचों को कुछ दिनों के लिए कश्ती में ही रहना पड़ा।

६ जुलाई को इनको वापिस जहाज़ में लिया गया। ८ जुलाई को कनाडा सरकार द्वारा देश-निष्कासन का हुक्म जारी कर दिया गया जिसके अनुसार, ''अदालत द्वारा कानून की वैधता को कायम रखते हुए, हिंदुओं को छोड़कर दिए हुए फैसले के अनुसार, वैनकुवर स्थित आवास अधिकारियों को निर्देश दे दिया गया है कि कामागाटामारू पर सवार यात्रियों के देश-निष्कासन के लिए कार्यवाही की जाए।''

११ जुलाई को जहाज़ के कप्तान ने खुद फर्स्ट इंजीनियर, सेकंड तथा फोर्थ मेट तथा पानी वाले के बिना अन्य सभी यात्रियों को तट पर जाने से रोक दिया। जासूस हॉपकिन्सन द्वारा दी रिपोर्टों के आधार पर सरकार ने जहाज़ में राशन-पानी जाने की पूर्ण तौर पर पाबंदी लगा दी। सिक्खों के हमदर्द कनाडा निवासी ज़िला तरनतारन के नगर भिक्खीविंड के स. भाग सिंघ, गांव खुर्दपुर ज़िला जलंधर के भाई बलवंत सिंघ, गांव दलेर सिंघ वाला ज़िला मानसा के सरदार बतन सिंघ, स. हरनाम सिंघ साहरी तथा स. सुंदर सिंघ बाड़ियां को कनाडा सरकार अपना शत्रु समझने लग गई।

१८ जुलाई, १९१४ ई. को जहाज़ के एजेंट जोनसटोन ने वहां पहुंच कर जहाज़ की वापसी के बारे में विचार करनी चाही, परंतु बाबा गुरदित्त सिंघ ने उनको मिलने से इनकार कर दिया। जहाज़ में बंदी मुसाफिरों ने कनाडा सरकार के गवर्नर जनरल को तार भेज कर इंसाफ की मांग की। उन्होंने कहा कि वे पंजाबी सिक्ख किसान हैं तथा कनाडा में मेहनत कर अपना रोज़गार करने के लिए आये हैं। वे कनाडा के विकास में अपना योगदान डालने के लिए यहां पहुंचे हैं। ३५ हजार डालर खर्च करने के बावजूद भी उनको अपराधी कैदियों की तरह रखा जा रहा है। इस अपील का भी कोई असर न हुआ और रद्द कर दी गई।

१९ जुलाई, १९१४ ई. को आवास अधिकारियों की 'सी लाईन' नामक कश्ती से १२५ पुलिस वालों सहित एक अन्य कश्ती जहाज़ के समीप लाई गई। सिपाहियों ने यात्रियों पर फायरिंग शुरू कर दी। इससे जहाज़ के यात्री भड़क उठे तथा उन्होंने जहाज़ में मौजूद कोयले से इन पर हमला कर दिया। यह लड़ाई २० मिनट तक चलती रही। बाबा गुरदित्त सिंघ के अनुसार पुलिस अधिकारियों के साथ डॉ. रघुनाथ भी शामिल था, जिसको बतौर जासूस इस्तेमाल करने के लिए कनाडा सरकार ने उतरने की आज्ञा दे दी। इसके साथ ही जासूस हॉपकिन्सन तथा रघुनाथ की जहाज़ पर कब्ज़ा करने की योजना फेल हो गई।

२१ जुलाई को एच. एम. एम. रेनबो जंगी जहाज़ कामागाटामारू के पास तैनात कर दिया गया। बहुत-से भारतीय, जिनकी संख्या १० हज़ार के लगभग बताई जाती है, तट पर इकट्ठा होना शुरू हो गए थे। कनाडा सरकार ने रेनबो के कमांडर को निर्देश दिया कि वो अपने आदमी कामागाटामारू जहाज़ पर भेजे ताकि इनमें से गैर-सिक्खों की संख्या कम की जा सके। देश-निष्कासन की पालना न करने पर जहाज़ के मालिक तथा किराएदार के विरुद्ध भी कानूनी कार्यवाही शुरू

कर दी जाए। शाम को वैनकुवर के गुरुद्वारा साहिब में दीवान सजाए गए, जिसमें सख़्त आक्रोश का प्रकटावा किया गया तथा प्रस्ताव पारित किया गया कि अगर जहाज़ पर गोली चली या कैदी मुसाफिरों के जान-माल का नुकसान हुआ तो वैनकुवर में बसते सिक्ख आगजनी करेंगे।

२२ जुलाई को मुसाफिरों की ज़रूरतों के अनुसार रसद-पानी तथा तेल दिया गया। २२ जुलाई, १९१४ ई. को पायनियर में खबर प्रकाशित हुई।

''कामागाटामारू में सवार हिंदुओं (सिक्खों) ने आज उन सौ हथियारबंद पुलिस वालों को पीटा जो जहाज़ में चढ़ने की कोशिश कर रहे थे। जहाज़ में से फेंके गए ईंट-पत्थरों से कई पुलिस वाले जख्मी हो गए हैं, जिनमें पुलिस प्रमुख भी शामिल है। जहाज़ को चलाने की एक कोशिश सोमवार को की जाएगी। ओटावा सरकार ने जंगी बेड़े रेनबो के कमांडर को निर्देष दिया है कि वो अपने आदमियों की टुकड़ी कामागाटामारू के पास भेजे जो कि गुरुवार को रवाना होगा। सरकार के देश-निष्कासन सम्बंधी हुक्म की तामील न करने के लिए कामागाटामारू के मालिक तथा किराएदार के विरुद्ध कानूनी कार्यवाही भी शुरू की है।''

२३ जुलाई को सुबह ५:०० बजे जहाज़ ने लंगर उठा लिया तथा रेनबो की निगरानी तले योहकामा की तरफ रवाना हो गया। २४ जुलाई को सुबह ८:०० बजे तक रेनबो की सख्त निगरानी में जहाज़ चलता रहा।

१५ अगस्त, १९१४ ई. को यह योहकामा पहुंच गया। १८ अगस्त, १९१४ ई. को योहकामा से रवाना होकर २० अगस्त को कोबे पहुंचा।

३ सितंबर को कोबे से रवाना हो गया। ५ सितंबर को भारतीय अंग्रेज सरकार ने हुक्म जारी कर दिया कि विदेश से पहुंच रहे यात्रियों की जांच-पड़ताल की जाए। इस कार्य के लिए लुधियाना में कार्यालय भी खोल दिया गया।

१६ सितंबर को कामागाटामारू जहाज़ सिंगापुर पहुंच गया। यहां जहाज़ एक दिन के लिए रुका। यहां ठहरते समय भी १२ फौजी हथियारों से पूरी तरह लैस कश्ती में सवार होकर जहाज़ की पूरी निगरानी रखते रहे।

२६ सितंबर, १९१४ ई. को यह जहाज़ सुबह ६:२० बजे हुगली नदी में प्रवेश कर २९ सितंबर को कोलकाता से लगभग २६-२७ किलोमीटर दूर बजबज घाट पर पहुंच गया। यहां सारे जहाज़ की तलाशी ली गई तथा मुसाफिरों को गाड़ी द्वारा पंजाब जाने के आदेश दिए गए। १७ मुसलमान मुसाफिर सरकार का हुक्म मानकर गाड़ी में सवार हो गए। जुझारू सिक्ख श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पावन स्वरूप सहित जलसे के रूप में कोलकाता की तरफ पैदल ही चल पड़े । रास्ते में उनको रोककर गाड़ी में सवार होने के लिए कहा गया। बाबा गुरदित्त सिंघ ने उनको दलील दी कि वह एक व्यापारी है तथा उसने कोलकाता जाकर जापानी कंपनी के साथ हिसाब-किताब करना है। इस बात पर अंग्रेज अफसर का इनके साथ तकरार हो गया। बाबा जी के सात वर्षीय रोते-बिलखते बेटे को सिपाही पकड़ कर ले गया। अंग्रेज

अफसर ईस्टवुड ने अपनी पिस्तौल से गोली चला दी। एक गोली स. हरनाम सिंघ की दसतार में लगकर निकल गई। दूसरी गोली गांव उदोनंगल निवासी स. ठाकर सिंघ को लगने से वह जख्मी हो गया। मुसाफिरों में भगदड़ मच गई। इसी भगदड़ में किसी ने ईस्टवुड को पार बुला (मार) दिया।

पुलिस एवं फौज की टुकड़ियों ने उन पर गोली चलाई। फलस्वरूप निम्नलिखित मुसाफिर शहीद हो गए:—

	नाम	पिता का नाम	गांव	थाना
१.	स. सीहान सिंघ	स. सेवा सिंघ	कोट दाता	सरहाली
२.	स. इंदर सिंघ	स. वीर सिंघ	सिदवां	राहों
३.	स. अरजन सिंघ	स. लक्खा सिंघ	ढुड्डीके	जलंधर
४.	स. लछमण सिंघ	स. देवा सिंघ	माणोचाहल	तरनतारन
५.	स. नरैण सिंघ	स. बचन सिंघ	लोआगे देवा	जीरा
६.	स. रूड़ सिंघ	स. लाभ सिंघ	माणूके	श्री अमृतसर
७.	स. भजन सिंघ	स. अनोख सिंघ	राजोआणा	धनौला
८.	स. चंनण सिंघ	स. काहन सिंघ	बजीरके	बरनाला
९.	स. शिव सिंघ	स. महिताब सिंघ	नानके	तरनतारन
१०.	स. रूड़ सिंघ	स. शेर सिंघ	मंगिआणा	बाजेवाल
११.	स. केहर सिंघ	स. झंडा सिंघ	खमाणो	
१२.	स. ईशर सिंघ	स. बूवा सिंघ	मानकी सिद्धू	जगराउं
१३.	स. इंदर सिंघ			
१४	स. टहिल सिंघ	स. गंडा सिंघ	रामवाला	सरहाली
१५	स. रतन सिंघ उर्फ करम सिंघ	स. बतन सिंघ	जमसेर	जलंधर
१६.	स. मसता सिंघ	स. बिशन सिंघ	लील माजरी	रायकोट
१७.	स. ककड़ सिंघ	स. राम सिंघ	पाखरी	बाजेवाल

तीन लाशों की पहचान नहीं हो सकी। आर. के. मजूमदार (बंगाल) तथा दीनबंधु (उड़ीसा) जिंदा पकड़े गए, परंतु बाद में पुलिस ने मार दिए थे।

पच्चीस जख्मी हुए, जिनमें से इनके नाम उपलब्ध हैं :— जनाब पीर बख्श, स. बादल सिंघ, स. मंगल सिंघ, स. रला सिंघ, स. टहिल सिंघ, स. इंदर सिंघ, स. प्रभ सिंघ, स. इंदर सिंघ, स. हजारा सिंघ, स. बहादर सिंघ, स. मल्ल सिंघ, स. सुंदर

सिंघ, स. सुच्चा सिंघ, स. सुनेर सिंघ, स. गुरदित्त सिंघ, स. ब्रिजपाल सिंघ, स. बखतावर सिंघ, स. बिशन सिंघ, स. मुनशा सिंघ, स. दरबारा सिंघ, स. नारंग सिंघ। बहुत-से पकड़ लिए गए। इन शहीदों ने देश की अवाम में नयी चेतना पैदा कर दी।

बाबा गुरदित्त सिंघ अपने कुछ साथियों सहित वहां से बचकर निकलने में सफल हो गए, जिनके नाम हैं— स. किरपा राम गांव मीनापुर, स. बरकत सिंघ गांव संतपुर, स. मुनशा सिंघ गांव ढोडा माजरा, स. राम सिंघ गांव अबूल, स. माया सिंघ गांव भड़ाना, स. बंता सिंघ गांव ठट्ठा, स. नंद सिंघ गांव बलोर, स. भाग सिंघ गांव समरा, स. संता सिंघ गांव कुरदी, स. गूना सिंघ गांव घलोटी, स. अरजन सिंघ गांव खिआला, स. वीर सिंघ गांव चंबल, स. आसू सिंघ गांव खोरदाता, स. चतर सिंघ गांव सरहाली, स. नरैण सिंघ गांव कारिआवाला, स. बुध सिंघ गांव तुंगवाल, स. शेर सिंघ गांव तुंगवाल, श्री कर्ता राम गांव तुंगवाल, स. केहर सिंघ गांव सोता, स. पाखर सिंघ गांव जंडियाला, स. दलजीत सिंघ गांव कौणी, श्री बंसी लाल गांव तुंगवाल, स. साधा सिंघ गांव चूहड़चक्क, स. लाल सिंघ गांव खिआली, स. भगत सिंघ गांव सहिणा, स. हरमन सिंघ गांव ढोलन, स. पूरन सिंघ गांव चंन, स. संतोख सिंघ गांव कमालपुर, श्री गोडी राम गांव अचरबाल।

बाबा गुरदित्त सिंघ ने अपने दो साथियों सहित रात एक छंभ (जंगल में जलकुंड वाला स्थान) में बिताई। उनकी टांगों के साथ जोकें चिपकी रहीं और वे उन्हें तोड़-तोड़कर फेंकते रहे। प्रभात होते ही बाबा जी अकेले किसी बस्ती की खोज में निकल पड़े। उनका प्रयोजन बंगाली लीडरों से मिलकर उनको इस घटना की जानकारी देना था। वे सफल न हो सके। एक बंगाली ने उनके लिए बंगाली पहरावे का प्रबंध किया, जिसको पहन कर वे रेल द्वारा जगन्नाथपुरी को रवाना हो गए। रेल के सफर के दौरान सी. आई. डी. के सिपाहियों को शक होने पर उन्होंने रेलगाड़ी में से छलांग लगा दी। वे पगडंडियों द्वारा जयपुर व मारवाड़ के इलाके में पहुंच गए। आपने बंबई जाकर उच्च कोटि के लीडरों से मुलाकात कर आप-बीती सुनाई, परंतु कोई भरोसेयोग्य परिणाम न निकला।

बाबा गुरदित्त सिंघ ६ वर्ष गुप्तवास रहने के बाद श्री ननकाणा साहिब के खूनी साके के बाद सामने आए। श्री ननकाणा साहिब में श्री गुरु नानक देव जी का प्रकाश उत्सव पूरी श्रद्धा-भावना के साथ मनाया जा रहा था। आप मुख्य समागम से एक दिन पहले पहुंच गए तथा अपनी गिरफ्तारी का एलान कर दिया। आपको गिरफ्तार कर लाहौर जेल भेज दिया। लाहौर से बदल कर आपको डेरा गाज़ी खान जेल में बंद कर दिया गया। वहां से २६ दिसंबर, १९२२ ई. को रिहा कर दिया गया। बजबज घाट के साके में शामिल चार सिक्खों को गिरफ्तार कर भारत की पुरातन जेल डिगशेई (हिमाचल प्रदेश) में बंद रखने के बाद फांसी पर लटका दिया गया।

वापिस आकर बाबा गुरदित्त सिंघ फिर से राष्ट्रीय आंदोलन में जुट गए और कई बार कैद काटी। अंग्रेज सरकार द्वारा जासूस तथा मुखबिरों को बड़े-बड़े इनाम देकर ज़मीन के मुरब्बे दिए गए थे। बाबा गुरदित्त सिंघ की अगुआई तले गदरी बाबाओं ने बहुत-से मुखबिरों को हॉपकिन्सन सहित उनके किए की सज़ा देकर मार डाला।

आप १९२६ ई. में स. सुरमुख सिंघ झबाल के जेल चले जाने के कारण शिरोमणि अकाली दल के कार्यकारी अध्यक्ष बने। १९२६ ई. में इंडियन नेशनल कांग्रेस के गुहाटी सेशन में ५० सिक्ख डेलीगेटों सहित रोष के रूप में सभा का बहिष्कार किया, क्योंकि सब्जेक्ट कमेटी ने अपने प्रस्तावों में नाभा के महाराजा स. रिपुदमन सिंघ को गद्दी से उतार कर किए गए अन्याय के बारे में उल्लेख करने का सुझाव नहीं माना था। १९३१ ई. से १९३३ ई. तक अपनी राजनीतिक गतिविधियों के कारण आप तीन बार जेल गए। १९३७ ई. में इन्होंने कांग्रेस की टिकट पर पंजाब लेजिस्लेटिव असेंबली का चुनाव लड़ा परंतु हार गए। बजबज घाट का गोलीकांड भारत की आज़ादी के लिए लड़ी गई लड़ाई की एक अहम घटना है, जिससे प्रेरणा लेकर स्वतंत्रता संग्राम का जन्म हुआ। देश के लिए की गई कुर्बानी के साकों में बजबज घाट का उल्लेख भी सम्मान से किया जाता है। १९४७ ई. में भारत की स्वतंत्रता के बाद सिक्खों ने शहीदों की यादगार बनाने का प्रयास किया। बजबज स्टेशन के पास १९५२ ई. में शहीदों की याद में एक स्मारक स्थापित किया गया। २४ जुलाई, १९५८ ई. को बाबा गुरदित्त सिंघ अकाल प्रस्थान कर गए। उस समय आप कोलकाता गए हुए थे। अगले दिन भारी इकट्ठ के रूप में बाबा जी के मृत शरीर को श्री अमृतसर लाया गया तथा उनके गांव सरहाली में अंतिम संस्कार किया गया। गांव सरहाली में बाबा गुरदित्त सिंघ की याद में गुरुद्वारा बाबा राम सिंघ जी में एक निशान साहिब सुशोभित किया गया है। गांव में बाबा जी का पैतृक घर है, जिसमें उनका पड़पोत्र स. बलजीत सिंघ चंडीगढ़ से कभी-कभी आकर रहता है। श्री गुरु सिंघ सभा कोलकाता द्वारा १९५२ ई. से १९६२ ई. तक संगत के सहयोग से शहीदी दिवस मनाया जाता रहा। १९६२ ई. के बाद यह जिम्मेदारी स्थानीय सिक्खों ने अपने कंधों पर ले ली। १९६६ ई. में इन्होंने यहां शहीदों की याद में एक गुरुद्वारा साहिब 'शहीद गंज कामागाटामारू' का निर्माण करवाया। यहां हर वर्ष २७ से २९ सितंबर तक शहीदों की याद श्रद्ध-भावना से मनाई जाती है।

इस ऐतिहासिक घटना पर बहुत-से लेखकों ने अपनी कलम द्वारा रोशनी डाली। शौरोन पोलक ने सबसे पहले इस घटना पर नाटक लिखा। इनके बाद अजमेर रोडे, साधू बिनिंग ने भी इस घटना पर नाटक लिखे। सन् २००४ ई. में अली काजमी ने इस घटना के वृत्तांत की दुर्लभ पेशकारियां प्रस्तुत कीं। २३ जनवरी, १९८९ ई. को कामागाटामारू जहाज़ की रवानगी की ७५वीं वर्षगांठ के अवसर पर वैनकुवर के गुरुद्वारा साहिब में यादगारी समागम किया गया। २३ मई, २००८ ई. को ब्रिटिश कोलंबिया विधान सभा ने इस घटना के प्रति क्षमा-याचना प्रस्ताव पारित कर अपनी भूल का इज़हार किया तथा ३ अगस्त को प्रधानमंत्री स्टीफन हॉर्पर द्वारा इस घटना पर माफी मांगी गई। १ मई, २०१४ ई. को कनाडा सरकार के डाक विभाग द्वारा कामागाटामारू जहाज़ की आमद की १००वीं वर्षगांठ के अवसर पर डाक टिकट जारी कर शहीद देश-भक्तों के प्रति अपनी श्रद्धा अर्पित की गई। सरहाली गांव वालों ने बाबा जी की याद में स्पोर्ट्स क्लब बनाया है, जिसमें हर वर्ष खेल मेला आयोजित किया जाता है।

इंकलाबी योद्धा : शहीद ऊधम सिंघ

*-सतविंदर सिंघ फूलपुर**

स. ऊधम सिंघ का जन्म २६ दिसंबर १८९९ ई. को स. टहिल सिंघ के घर हुआ। पाँच साल की उम्र में माता नरैण कौर अकाल प्रस्थान कर गए।[१] १९०७ ई. में इनके पिता स. टहिल सिंघ भी परलोक सिधार गए।

यतीम अवस्था में स. ऊधम सिंघ और इनके बड़े भाई स. साधू सिंघ को इनके एक नज़दीकी रिश्तेदार (रागी सिंघ) ने २४ अक्तूबर, १९०७ ई.[२] को श्री अमृतसर में स्थित सेंट्रल खालसा यतीमखाना में दाख़िल करवा दिया ताकि इनकी परवरिश हो सके। यहां ये पढ़ाई के साथ-साथ लुहार, बढ़ईगिरी और कुछ राग-विद्या भी सीख गए। सेंट्रल खालसा यतीमखाना वाले आदर्श जीवन-जाच की सृजना करने वाले माहौल ने इनकी शख्सियत को निखारा। अमृत वेले जागना, स्नान करना, गुरुद्वारा साहिब जाना, गुरबाणी पढ़नी, सेवा करनी आदि गुरमति आदर्श इनके व्यवहारिक जीवन का हिस्सा बन गए थे।

१३ अप्रैल, १९१९ ई. को १९७६ बिक्रमी की वैसाखी वाले दिन जलियां वाला बाग़ में रोल्ट एक्ट का विरोध कर रहे बीस हजार के करीब लोगों के जलसे पर जनरल डायर ने गोलियाँ चलाने का हुक्म दे दिया, जिस दौरान सैकड़ों निर्दोष लोग मारे गए। अनेक लोग दौड़ कर कुएं में गिर गए। कुआं लाशों से भर गया। स. ऊधम सिंघ उस समय अपने साथियों सहित बाग़ के बाहर छबील पर पानी पिला रहा था।[३]

वैसाखी के मेले पर पेशावर से आई बीबी रतन देवी, जिसका पति इस हमले में गोली का शिकार हुआ था, गुरुद्वारा बाबा अटल राय साहिब के पास शाम को ऊँची आवाज में विलाप कर रही थी और अपने पति की लाश ढूँढने के लिए मदद हेतु गुहार रही थी। उस समय यह आवाज़ स. ऊधम सिंघ ने सुनी और उस महिला को साथ लेकर रात को ख़ूनी साके वाली जगह पर पहुँच गया। बड़ी मुश्किल से उसने उस महिला के पति की लाश ढूँढी और पीठ पर उठा कर बाबा अटल राय साहिब वाले स्थान पर ले आया।[४] रात भर स. ऊधम सिंघ को नींद न आई। उसकी आँखों के सामने वहां के दर्दनाक दृश्य आ रहे थे।

१४ अप्रैल को स. सुंदर सिंघ मजीठिया ने यतीमख़ाने के बच्चों की ड्यूटी लावारिस लाशें संभालने के लिए लगवा दी। स. ऊधम सिंघ सक्षम और सुडौल होने के कारण अपने साथ आए यतीमख़ाने के विद्यार्थियों का अगुआ बन कर काम कर रहा था।[५] घायलों की इसने मरहम-पट्टी की। मुर्दों को दफनाया और दाह संस्कार किया। लाशों के ढेर ने स. ऊधम सिंघ के

**संपादक। फोन : ९९१४४-१९४८४*

हृदय पर गहरा आघात किया।

इस साके (घटना) के तीन दोषी थे—जनरल डायर, पंजाब का लेफ्टिनेंट गवर्नर माइकल ओडवायर और लार्ड जेटलैंड, जो भारत का सेक्रेट्री ऑफ स्टेट था। स. ऊधम सिंघ ने प्रण किया कि जब तक मैं निर्दोष भाइयों के कातिलों से बदला न ले लूँ, चैन की ज़िंदगी बसर करनी मेरे लिए शर्मनाक होगी। इस मनोरथ को वह श्री अमृतसर रह कर अभी पूरा नहीं कर सका था कि ३० मई, १९१९ ई. को यह ख़बर मिल गई कि माइकल ओडवायर को लंडन बुला लिया गया है। स. ऊधम सिंघ ने हिम्मत न हारी और लंदन जाने की योजनायें बनाने लगा।

आखिर १९१९ ई. के अंत में स. ऊधम सिंघ अफ्रीका पहुँच गया। १९२३ ई. में इंग्लैंड गया। २४ जुलाई, १९२७ ई. को जनरल डायर इंग्लैंड में अपनी मौत खुद मर गया।

पंजाब में बब्बर अकालियों की सरगर्मियों के बारे में सुन कर स. ऊधम सिंघ १९२७ ई. में पंजाब लौट आया। लाहौर के डब्बी बाज़ार में पुलिस ने कार रोक कर तलाशी ली तो इसके पास से चार सौ गोलियों का अटैची और चार रिवाल्वर बरामद हुए बता कर केस दर्ज कर दिया, जिस कारण चार साल की कठोर सज़ा काट कर १९३२ ई. में रिहा हुआ।[६]

स. ऊधम सिंघ ने १९३३ ई. में यूरोप जाने के लिए राम मुहम्मद सिंघ आज़ाद नाम पर पासपोर्ट बनवाया। स्विटजरलैंड, जर्मनी, हॉलैंड, फ्रांस आदि देशों में घूमता आखिर में लंडन पहुँच गया। यहाँ एक इंजीनियर फर्म में काम मिल गया। इंडिया ऑफिस लंडन से सर माइकल ओडवायर के स्थान का पता लेकर अपनी डायरी में नोट कर लिया।

१२ मार्च, १९४० ई. की अखबारों में यह ख़बर छपी कि १३ मार्च को कैसस्टन हाल में एक जलसा हो रहा है, जिसकी अध्यक्षता लार्ड जेटलैंड (सेक्रेट्री ऑफ स्टेट फॉर इंडिया) करेगा। इसमें बरतानिया पार्लियामेंट के मैंबर, हिंदुस्तान के वायसराय और लेफ्टिनेंट गवर्नर सर माइकल ओडवायर हिस्सा ले रहे हैं। यह पढ़ कर स. ऊधम सिंघ को अपनी की हुई अरदास पूरी होती दिखाई दी।[७]

स. ऊधम सिंघ ने अपने हमवतनी को चिट्ठी लिखी— ''आज पूरे २१ साल बीत गए, परन्तु जलियां वाला बाग़ के ख़ूनी साके का दर्द सीने में से कम नहीं हुआ। अब ऐसा लगता है कि परीक्षा की घड़ी सिर पर आ पहुँची है। प्यारे दोस्तो! आखिरी सलाम! दुआ करो कि मैं अपनी परीक्षा में सफल हो जाऊँ।[८] १३ मार्च का दिन आ गया। हॉल में उस दिन की बहस में एक दल हिंदोस्तान और दूसरे देश, जो अंग्रेज़ों के अधीन थे, उनको ज़्यादा अधिकार देने के पक्ष में था, परन्तु ओडवायर का दल इसके विरुद्ध था। वह इस पक्ष में था कि हिंदोस्तानी लोग आज़ादी के हकदार नहीं, इनको दबा कर रखना चाहिए। उसने भाषण शुरू किया— ''मैं अपनी साजिश और डंडे के ज़ोर से हिंदोस्तान के लोगों को सैकड़ों साल अभी और ग़ुलाम रख सकता हूं। ये नीच हैं, पशु हैं। आज से २१ साल पहले मैंने अमृतसर के जलियां वाला बाग़ में इनको ऐसा

पाठ पढ़ाया था कि ये उसे अब तक याद करते हैं। इन मूर्ख लोगों को अधिकारों की क्या पहचान?. . . आदि।[९]

वह जब हिंदवासियों के ख़िलाफ़ ऐसे शब्द बोल कर कुर्सी पर बैठा तो स. ऊधम सिंघ ने ओवर कोट में से पिस्तौल निकाल कर माइकल ओडवायर की छाती में दो गोलियां मारी और उसकी वहीं पर मृत्यु हो गई। शहीद ऊधम सिंघ गोली मारने के बाद भागा नहीं, बल्कि बुलंद इरादे से खड़ा रहा। उसे गिरफ़्तार कर मुकद्दमा चलाया गया। ३१ जुलाई, १९४० ई. को पेंटोविले जेल में फांसी पर चढ़ कर सदा के लिए अमर हो गया। स. ऊधम सिंघ के इस कारनामे की भारत में खूब प्रशंसा हुई और उसे 'फाइटर फॉर फ्रीडम' तथा 'स्वतंत्रता का महान योद्धा' कहा गया। उसके हाथों चली गोली को दुखी और दबाए हुए लोगों की पुकार कहा गया।

चालीस वर्ष तक अपने जज़्बे को कायम रखते हुए सात समुद्र पार ज़ालिम के घर (देश) जाकर उसे उसके किये का फल चखाना कलगीधर पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के अकाल पुरख से प्रार्थना स्वरूप शबद ''देह सिवा बरु मोहि इहै सुभ करमन ते कबहूँ न टरों'' का ही फल था, जिस शबद को वह आश्रम में रहते हुए सुबह-शाम प्रार्थना के समय पढ़ा करता था।

शहीद ऊधम सिंघ की अस्थियां २७ जुलाई, १९७४ ई. को भारत लाई गईं और पूरे देश में ले जाई गईं। सेंट्रल ख़ालसा यतीमखाना, श्री अमृतसर में तत्कालीन डिप्टी कमिशनर, श्री अमृतसर ज़िले के अफ़सर, चीफ़ ख़ालसा दीवान की एग्जीक्यूटिव कमेटी के सदस्य साहिबान तथा शहर के उन्य गणमान्य लोगों ने अस्थि-कलश का शानदार स्वागत किया। यह हरेक भारतीय और यतीमख़ाने के निवासियों एवं प्रबंधकों के लिए फख्र एवं भावना से भरा समय था। इस देश-भक्त को श्रद्धाँजलि अर्पण करने के लिए यतीमख़ाने के अंदर समारोह आयोजित किया गया, जिसमें शहीद की पवित्र याद में पब्लिक लायब्रेरी स्थापित करने का प्रस्ताव पारित किया गया और फिर लायब्रेरी स्थापित की गई। जिस कलश में शहीद ऊधम सिंघ की अस्थियां लाई गई थीं, वह आज भी जलियां वाला बाग़ में स्थित म्यूज़ियम में सुशोभित है। सेंट्रल खालसा यतीमखाना में होस्टल का वह कमरा आज भी मौजूद है जहाँ शहीद ऊधम सिंघ रहा करता था।

हवाले :

१. सूबा सिंघ, इंकलाबी योद्धा ऊधम सिंघ (प्र.), भाग सिंघ अणखी, सेंट्रल ख़ालसा यतीमखाना, चीफ़ ख़ालसा दीवान, तेज प्रिंटिंग प्रेस, कटरा शेर सिंघ, श्री अमृतसर, १९७४, पृष्ठ ८.

२. रजिस्टर दाखिला/खारिज, सेंट्रल ख़ालसा यतीमखाना, पृष्ठ १३, १९०४ से १९४८ ई.

३. सूबा सिंघ, उपरोक्त, पृष्ठ १९.

४. कुलबीर सिंघ, सरदार ऊधम सिंघ, पंजाब किताब घर, माई हीरां गेट, जलंधर, हिंदी प्रेस, पक्का बाग़, जलंधर, १९६७, पृष्ठ २७६.

५. सूबा सिंघ, उक्त, पृष्ठ २२.

६. उक्त, पृष्ठ २७.

७. उक्त, पृष्ठ २९.

८. पिआरा सिंघ दाता, वतन दे शहीद, नेशनल बुक शॉप, नई दिल्ली, १९८२, पृष्ठ १३१.

९. सूबा सिंघ, उक्त, पृष्ठ ३१.

गुरमति विचारधारा : एक अध्ययन

*डॉ. सरबजीत कौर**

मध्य काल के पंजाबी साहित्य-चिंतन की आध्यात्मिक काव्य धाराएं— भक्त-बाणी, सूफी काव्य और गुरबाणी एक ही समय की प्रमुख काव्य धाराएं हैं। भारतीय संस्कृति और साहित्य का मूल प्रेरणा-स्रोत आध्यात्मवाद है। भारतीय सभ्याचार और साहित्य-विकास-पड़ाव पर धर्म मुख्य प्रेरक शक्ति रहा है। मानवीय सोच-समझ में अंतर भी धार्मिक संदर्भों के अंतर्गत ही आया है। भारत की धरती पर हर इंकलाब धर्म के प्लेटफार्म के ज़रिये आया है। नाथों-योगियों, सिद्धों, जैनियों, शैवों आदि सभी ने अपने विचारों का आरंभ धार्मिक प्लेटफार्म से ही शुरू किया है। ''रामायण और महाभारत के रचनाकारों ने समकालीन सामाजिक स्थिति पर आध्यात्मिकता के संदर्भ में रौशनी डाली।''[१]

गुरमति विचारधारा को जानने से पहले यह जान लेना ज़रूरी है कि मध्यकालीन पंजाबी साहित्य के लंबे अरसे में एक से अधिक विचारधारक काव्य परंपराएं एक दूसरे के समानांतर चलती रही हैं। ये काव्य परंपराएं विचारधारक स्तर पर जहां एक तरफ पूर्वकालीन परंपरा के साथ संवाद रच रही हैं वहीं दूसरी तरफ इनसे भिन्न भी हैं। इन काव्य परंपराओं में विचार स्तर पर भिन्नता तो है परंतु रचनात्मक स्तर पर सरोकार एक दूसरे के पूरक हैं। इस गठजोड़ के तथ्य का आधार मध्य काल में हुए विचारधारक और सांस्कृतिक संश्लेषण को माना है। सूफी काव्य पूरी तरह से सामी चिंतन से प्रभावित है और बाणीकार भारतीय चिंतन के साथ जुड़े हुए हैं। इस संश्लेषण के साथ ऐसी धरातल बनी, जिसके साथ दो विभिन्न चिंतन एक दूसरे के नज़दीक आए, विचारों का संयोग हुआ, एक दूसरे को पहचाना, एक दूसरे को प्रभावित किया।

''मध्य काल में गौरवमयी विरासत की गतिशीलता, विकासशीलता और रूपांतरणशीलता भक्ति लहर के आध्यात्मिक दर्शन द्वारा प्रस्तुत हुई। इस लहर को इंकलाबी दिशा देने वाले पंजाब के युगपुरुष, आध्यात्मिक रहबर श्री गुरु नानक देव जी थे, जिनके जीवन-अनुभव और विचारों द्वारा गुरमति विचारधारा का उद्भव हुआ।''[२]

हिंदू धर्म में पूजा का महातम था और है। यह धर्म मूर्ति-बंधन में बंधा होने के कारण परम शक्ति को मंदिरों तक ही सीमित करके बैठा रहा। पूजा इसके महातम की क्रियाशीलता समूह से विहीन होने के कारण वर्ग विशेष तक ही सीमित रही। हिंदू धर्म अवतारवाद, श्रेणी-विभाजन, पूजा-आडंबर तक ही सीमित होने के कारण धर्म

**गाव-डाक : सत नगर, ज़िला : सिरसा, फोन : ९४७८६५८४९३*

की सहजता से दूर हो गया।

''मध्य काल में भारतीय समाज पतन की खाइयों में धंस चुका था। राजाओं में मानवता की कमी थी। बाहर आकर कभी भी लोगों की शिकायतों और तकलीफों की बाबत जानकारी नहीं लेते थे। यहीं बस नहीं होती, बाहरी देशों के हमलावर पश्चिमी भारत के लोगों पर अत्याचार करते थे तथा उनकी तकलीफें बढ़ाते थे।''[३]

यह समय राजनीतिक उथल-पुथल वाला था। हर्षवर्धन की मौत के बाद कोई भी संगठित राज्य स्थापित नहीं हो सका। दूसरी तरफ ब्राह्मण वर्ग की नीति ने समाज को तितर-बितर कर रखा था और साथ ही मुसलमान हमलावरों के बार-बार हमलों एवं जब्र-जुल्म ने भारतीय समाज को प्रारंभ से ही क्षीण कर दिया था। ब्राह्मण वर्ग ने धर्म को संकीर्णता की जंजीरों में जकड़ दिया और धर्म की विशालता के पक्ष को रद्द कर धर्म को संकुचित कर दिया। मुक्ति का सिद्धांत चुनिंदा वर्ग को दिया गया। धर्म की सर्वव्यापकता को भूल कर इसमें कट्टरता, कपटवाद, भेदभाव और जुल्म प्रवेश कर गया। कर्म-कांड, जप-तप, तीर्थ-स्नान, ब्राह्मण के आदेशों की पालना और उनको दान देना, मूर्ति-पूजा आदि हिंदू धर्म की भक्ति के मुख्य साधन बने।

''दुनिया के ज्यादातर महापुरुष धार्मिक और सामाजिक नेता अपने समय में अपनी साधना और आत्मिक मनोबल से ऐसे आदर्शमयी कीर्तिमान स्थापित कर जाते हैं जिससे सृष्टि का बिगड़ा संतुलन स्थिरता में आ जाता है।''[४]

भारत के ऐसे धुंधूकारे माहौल में श्री गुरु नानक देव जी का प्रकाश (जन्म) होता है। उन्होंने अपने आध्यात्मिक चिंतन के साथ-साथ सूक्ष्म दृष्टि के द्वारा समकालीन राजाओं, अहलकारों, जो गरीब जनता का खून चूस रहे थे, पर तीक्ष्ण प्रहार किया। इस अंधकारमय स्थिति का संकेत श्री गुरु नानक देव जी की बाणी में प्राप्त है :

कलि काती राजे कासाई
धरमु पंख करि उडरिआ॥
कूडु अमावस सचु चंद्रमा
दीसै नाही कह चड़िआ॥
हउ भालि विकुंनी होई॥
आधेरै राहु न कोई॥
विचि हउमै करि दुखु रोई॥ *(पन्ना १४५)*

इस धुंधूकारे में से गुरमति लहर अथवा गुरमति विचारधारा का आरंभ हुआ। इस राज्यगर्दी और युगगर्दी के माहौल में सत्य के पुंज के उदय के साथ सत्य की रौशनी प्रज्वलित हुई। यह रौशनी जीवन और सभ्याचार को निरंतर मार्गदर्शन देती रही। इस रौशनी को साहित्यक और दार्शनिक स्तर पर गुरमति विचारधारा का नाम दिया जाता है। इस विचारधारा ने पंजाबी सभ्याचार में सामाजिक एवं राजनीतिक इंकलाब पैदा किया और लंबे समय से पीड़ित जनता में स्वाभिमान, गैरत तथा आत्मसम्मान की ज्ञान-रौशनी को प्रज्वलित किया। यह रौशनी की किरण श्री गुरु नानक देव जी की बाणी के साथ धरती को प्रकाशमयी बनाती है। भिन्नता इसमें है

कि इसके मूल सरोकार धरती के साथ जुड़े हैं। यह बाणी केवल ब्रह्मांड की बात ही नहीं करती, बल्कि पारलौकिक को लौकिक के झरोखे के माध्यम से पेश भी करती है। इस विचारधारा ने, परमात्मा की सरल और सहज प्रकृति तथा प्राप्ति ने मानव को एक ऐसी सोच दी जो भ्रम और भेस से स्वतंत्र थी। सनातनी धर्म का संस्थागत रूप इतना अमानवीय था कि मानव मुक्ति का हकदार नहीं था।

''बाणी का केंद्र-बिंदु ब्रह्म (प्रभु) है। यह दार्शनिक संकल्पनाओं के इर्द-गिर्द घूमती है। बाणी, ब्रह्म क्या है, उसका अस्तित्व क्या है, ब्रह्मांड की लीला क्या है, जगत-क्रिया में कौन-से बुनियादी नियम कार्य कर रहे हैं आदि दार्शनिक विषयों को अपनी आगोश में लेती है।''[५]

''किसी विचारधारा की विकास-प्रक्रिया तब अस्तित्व में आती है, जब वह परंपरा से टूटती है या स्थापित मानवता का विरोध करती है, परंपरा को नई दिशा देकर इसका रूपांतरण करती है। विकास का यह रूप गुरमति विचारधारा पर पूरी तरह से उपयुक्त है। इस धारा से पूर्वकालीन भारतीय समाज तीन बड़े और नुकसानदायक तत्वों के प्रभाव अधीन गुज़र रहा था। समाज की प्रगति में सबसे बड़ा बाधक तत्व था— वर्ण-आश्रम-धर्म की स्थापि को कायम रखना; दूसरा, जिंदगी के प्रति त्यागवाद की रुचि और तीसरा, अहिंसा का सिद्धांत। जैनी कड़े त्याग के समर्थक थे। बुद्ध धर्म के अहिंसा के सिद्धांत ने भारत को गुलामी की जंजीरों में जकड़ दिया।''[६]

गुरमति विचारधारा ने भेदभाव से मुक्त होकर एकेश्वरवाद का संकल्प पेश किया। परम शक्ति अपनी सृजित कायनात के तिनके-तिनके के साथ जुड़ी है। इस शक्ति की प्राप्ति के लिए न कोई भेस धारण करने की ज़रूरत है, न ही किसी विशेष वर्ग में जन्म लेना अनिवार्य है। परम अस्तित्व को प्राप्त करने के मार्ग में से ही जीवन-दर्शन की परिभाषा ढूंढी जा सकती है। संगत और पंगत का सिद्धांत मानवीय-समानता और भाईचारक प्रेम के लिए संदेश था। गुरमति विचारधारा का मुख्य मकसद वर्ग रहित समाज का निर्माण करना था, जो खालसा पंथ के रूप में सामने आया।

श्री गुरु नानक देव जी का कथन है कि सभी योगी, सन्यासी, पीर और आध्यात्मिक अगुआ परमात्मा के दरवाज़े पर डेरा लगाते थे, परंतु सच्चे गुरु की पूजा के बगैर सब खोटे थे।''[७]

बाणी में परमात्मा एक ऐसी परम शक्ति है जो किसी रंग, रूप, भेस, आकार और काल की सीमाओं से परे सर्वव्यापक है। यह वो शक्ति है जो समुच्चय सृष्टि की सृजक है। इस धरती पर ऐसी कोई दूसरी शक्ति नहीं जो परम शक्ति तथा मानव के बीच आ सके। सृष्टि उसकी बनावट है और मानव उसकी बनावट होने के बावजूद भी अधूरा है। मानव-संपूर्णता तो उस करतारी शक्ति के साथ अभेद होना है। बाणीकारों ने भेसवाद की जगह ''*मुंदा संतोखु सरसु पतु झोली धिआन की करहि बिभूति॥*'' का विचार पेश किया। इस

अभेदता का भागीदार बनने के लिए बाणीकारों ने धर्म का सरलीकरण कर समाज एवं गृहस्थ के त्याग के विचार को एक तरफ करके सामाजिक और गृहस्थ जीवन के दुख-सुख के साथ जुड़ने की शिद्दत के विचार को पेश किया। इस चिंतन में दुनियावी जीवन से भगौड़ा होना नहीं दिखाया, बल्कि गृहस्थ जीवन में दुख-सुख के साथ संघर्ष करने की शक्ति भरी है। गुरबाणी न तो किसी कठिन हठ-मार्ग की धारक है, न ही किसी कर्म-कांड में विश्वास रखती है। उस समय के प्रचलित धर्मों में आ चुकी गिरावट को देखते हुए धर्म में माने जाते मुखिया— मुस्लिम धर्म में काज़ी, हिंदू धर्म में ब्राह्मण और योग मत के योगियों के व्यवहार के बारे में बाणीकारों ने कड़ी आलोचना की है :

कादी कूड़ु बोलि मलु खाइ ॥
ब्राहमणु नावै जीआ घाइ ॥
जोगी जुगति न जाणै अंधु ॥
तीने ओजाड़े का बंधु ॥ (*पन्ना ६६२*)

''श्री गुरु नानक देव जी ने धर्मों में पाखंडवाद, संकीर्णता, रस्मों-रिवायतों और बाहरी दिखावे के खिलाफ प्रचार शुरू किया था। श्री गुरु नानक देव जी की बाणी इस प्रकार के सिद्धांतों के विपरीत है। श्री गुरु नानक देव जी ने बहुत ऊंची आवाज़ में 'एकेश्वरवाद' का नारा दिया।''[८]

''श्री गुरु नानक साहिब के धर्म का संकल्प यह है कि धर्म ने कौम को स्वतंत्रता और गैरत वाला जीवन देना है। उसके लिए सत्य की रक्षा के लिए साहस पैदा करना है और कौम को ऊंचा आत्मिक उद्देश्य एवं आचरण देना है। यह जीवन ''सति सुहाणु सदा मनि चाउ।'' रूप परमात्मा की भक्ति के साथ आता है।''[९]

''बाणीकार परमात्मा को मानवता में बसा कहते हैं। वहां वे केवल परमात्मा और उसकी सृजना की महिमा का गान कर रहे होते हैं न कि सृजना को परमात्मा का दर्जा दे रहे होते हैं। सृजना में माया भी है, ईश्वरीय ज्योति भी। सृजना ने शुभ अमलों के माध्यम से मुक्ति प्राप्त करनी होती है।''[१०]

''गुरमति विचारधारा के जीवन-दर्शन में ऐसी सामाजिक व्यवस्था की तरफ भी संकेत है जिसके अंतर्गत मानव को जीवन जीने और मुक्त होने का पूर्ण अधिकार है। बाणीकारों ने मानव को अपने आप को चौगिरदे की बजाय सत्य के साथ जुड़ने का उपदेश दिया।

हवाले और टिप्पणियां :

१. डॉ. अच्छर सिंघ (काहलों), *गुरमति विचारधारा : उद्भव और विकास तथा साहित्यक प्राप्ति,* पत्राचार शिक्षा, कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी, रू. ढ्ढ., स्द्गष्. १९९६-९७, कुरुक्षेत्र, पृष्ठ ११७
२. उपरोक्त।
३. *गुरू नानक दा विद्धिअक फलसफा,* पृष्ठ १७
४. धर्म पाल सिंघल, *रविदास बाणी विचार,* पृष्ठ १०१
५. डॉ महिंदर कौर (गिल), *गुरमति कावि,* पृष्ठ १९-२०
६. डॉ. अच्छर सिंघ (काहलों), *गुरमति विचारधारा : उद्भव और विकास तथा साहित्यक प्राप्ति,* पत्राचार शिक्षा, कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी, M. A. I., Sec. १९९६-९७, कुरुक्षेत्र, पृष्ठ ११७
७. *गुरू नानक दा विद्धिअक फलसफा,* पृष्ठ २४
८. उपरोक्त, पृष्ठ २१
९. डॉ. तारन सिंघ, *सिक्ख, सिक्खी अते सिद्धांत,* पृष्ठ ८९
१०. *मद्धकाली पंजाबी साहित विवेक,* पृष्ठ ७२

ख़बरनामा

इंग्लैंड के डरबी में गुरुद्वारा साहिब की हुई तोड़-फोड़ की भाई लौंगोवाल ने की निंदा

श्री अमृतसर : २६ मई : इंग्लैंड के शहर डरबी में गुरुद्वारा श्री गुरु अरजन देव जी में दाख़िल होकर एक पाकिस्तानी व्यक्ति द्वारा तोड़-फोड़ करने की शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल ने सख्त शब्दों में निंदा की है। यहाँ से जारी प्रेस बयान में भाई लौंगोवाल ने कहा कि इस सिरफिरे व्यक्ति द्वारा उस समय गुरु-घर की तोड़-फोड़ की गई, जब समूचे संसार में बसते गुरु नानक नाम लेवा सिक्ख श्री गुरु अरजन देव जी की लासानी शहादत को सजदा कर रहे थे। उन्होंने कहा कि विश्व भर में चलती कोरोना महामारी के कारण डरबी में स्थित इस गुरु-घर की तरफ से अन्य गुरु-घरों की तरह ज़रूरतमंदों की रोज़ाना बड़े स्तर पर मदद की जा रही है। उन्होंने कहा कि बेशक इस व्यक्ति को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है, परन्तु इस घिनौनी कार्यवाही के पीछे असली वजह की तह तक जाना बहुत ज़रूरी है और इस साजिश में शामिल सभी व्यक्ति जेल की सलाखों के पीछे होने चाहिए। उन्होंने इंग्लैंड सरकार से अपील की कि घटना की सच्चाई के बारे में जल्द से जल्द पता लगाया जाये और गुरु-घरों की सुरक्षा यकीनी बनाई जाये।

एक्सप्रेस वे में श्री अमृतसर को शामिल करने का भाई लौंगोवाल की तरफ से स्वागत

श्री अमृतसर : २ जून : दिल्ली-कटरा एक्सप्रेस वे में गुरू नगरी श्री अमृतसर सहित पंजाब के पाँच ऐतिहासिक स्थानों को शामिल करने का शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल ने स्वागत किया है। भाई लौंगोवाल ने कहा कि इस मार्ग में सुलतानपुर लोधी, श्री गोइंदवाल साहिब, श्री तरनतारन, श्री खडूर साहिब और श्री अमृतसर को जोड़ने की मंजूरी सिक्ख जगत के लिए ख़ुशी की ख़बर है। उन्होंने देश के प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी, केंद्रीय मंत्री श्री नितिन गडकरी सहित इस कार्य में योगदान देने वाली सभी शख्सियतों का धन्यवाद किया है।

उल्लेखनीय है कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की कार्यकारिणी कमेटी की पिछली सभा में एक प्रस्ताव पारित कर केंद्र सरकार को भेजा था, जिसमें माँग की गई थी कि 'एक्सप्रेस वे' में श्री अमृसतर को शामिल किया जाये। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने इस प्रस्ताव के माध्यम से कहा था कि श्री अमृतसर नगरी की बड़ी ऐतिहासिक महत्ता है और यहां स्थित आध्यात्मिक स्थान सचखंड श्री हरिमंदर साहिब में देश-दुनिया से संगत पहुँचती है, इसलिए एक्सप्रेस वे में से श्री अमृतसर नगरी को मनफी करना जायज नहीं। अब केंद्रीय मंत्री की तरफ से इसे मंज़ूरी देने पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से इस फैसले का स्वागत किया गया है।

भाई वरिआम सिंघ निमित हुए अंतिम अरदास समागम में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से जत्थेदार पंजोली ने की शमूलियत

श्री अमृतसर : २ जून : २६ वर्ष जेल में बंद रहे सिक्ख कैदी भाई वरिआम सिंघ के निधन पर उनके निवास स्थान उत्तर प्रदेश के गांव बरीबारा में हुए अंतिम अरदास समागम के अवसर पर उनके सुपुत्र स. जगदीश सिंघ व स. जसविंदर सिंघ को श्री अकाल तख्त साहिब और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से पहुँचे शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्य जत्थेदार करनैल सिंघ पंजोली ने गुरु-बख्शिश सिरोपाओ देकर समानित किया। श्री अखंड पाठ साहिब के भोग के अवसर पर श्री अकाल तख्त साहिब के जत्थेदार ज्ञानी हरप्रीत सिंघ और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल की तरफ से शोक संदेश भेजे गए। कोरोना वायरस के कारण संक्षिप्त रूप में किये गए अंतिम अरदास समागम के दौरान केवल भाई वरिआम सिंघ के पारिवारिक सदस्य और कुछ चुनिंदा नज़दीकी रिश्तेदार ही शामिल हुए।

अपने शोक संदेश में जत्थेदार ज्ञानी हरप्रीत सिंघ ने भाई वरिआम सिंघ को सिक्ख कौम का हीरा कहा। उन्होंने कहा कि सिक्ख संघर्ष में भाई साहिब का अहम योगदान है। उन्होंने ज़िंदगी का लंबा समय जेल में व्यतीत करते हुए सिक्खी सिद्धांतों पर पहरा दिया। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल ने अपने शोक संदेश में भाई वरिआम सिंघ को कौमपरस्त कहा। उन्होंने कहा कि भाई वरिआम सिंघ का सिक्ख जगत में बहुत सम्मान है और उनको कौम हमेशा याद रखेगी।

भाई वरिआम सिंघ की अंतिम अरदास में शामिल हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्य जत्थेदार करनैल सिंघ पंजोली ने कहा कि भाई वरिआम सिंघ जैसे लाखों सिक्खों ने ख़ालसा पंथ की विलक्षण हस्ती को बरकरार रखने के लिए कुर्बानी दी। कौम को श्री अकाल तख्त साहिब के नेतृत्व में हमेशा इकठ्ठा रहना चाहिए। इस अवसर पर जत्थेदार पंजोली ने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से भाई वरिआम सिंघ के परिवार को ५१ हजार रुपए की सहायता राशि का चेक सौंपा। दमदमी टकसाल के प्रमुख बाबा हरनाम सिंघ ख़ालसा, निहंग सिंघ जत्थेबंदियों की तरफ से बाबा बलबीर सिंघ प्रमुख बुड्ढा दल, माता गुजरी जी सहारा ट्रस्ट कलरभैणी सहित अन्य कई जत्थेबंदियों एवं प्रमुख शख्सियतों की तरफ से भी अपने शोक संदेश भेजे गए। इस अवसर पर सिक्ख मिशन हापुड़ के इंचार्ज स. ब्रिजपाल सिंघ, स. सुरिंदर सिंघ समाणा, सिक्ख स्कालर स. जगजीत सिंघ पंजोली, स. जसबीर सिंघ पटियाला आदि भी उपस्थित थे।